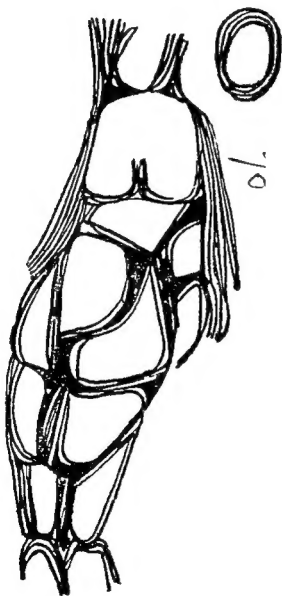


राई-राई रत

(कहाणी संग्रह)



बी. एल. माली 'अशांत'

मोल : बीस रुपिया । पैलो संस्करण : 1986/प्रावरण : जशि परगनिपा/
प्रकाशक : मुमिका प्रकाशन, 3/343 मालवीयनगर, जयपुर (राज०) मुद्रक :
हिन्दुस्तान प्रिन्टर्स, कुचेलपुरा, बीकानेर (राज०)

RABE-RABBERET : Short Stories By B L MALI 'Ashant'
Price - Rs 20 00

डा० कन्हैया लाल शर्मा ने
घणं बोड सू

सरैवार

1. समन्दर . ५
2. पिरागो . ११
3. गुदडी रो दरद : १७
4. थारै ब्याव रो बेस : २३
5. उणियारो : ३२
6. ब्याज घर बट्टो : ३६
7. छगजी रो बेटो . ४१
8. नागल : ४७
9. हमलो : ५४
10. माटी रो सोरम . ६१
11. राई-राई रेत : ६६

"मा रोटी ..!" गगन रं लूमतो राजू बोल्थो, "मनं भूख लाग मेली है मा ।" सोना बी रं सूखं मु डं कानी देवी, बीरी निजरघा उणरं मु डं मायं लागगी रोटी री सनीको बीरो सेत, बीरी वा चवदा बिलो दूध देवण घाळी गाय, भूरती बकरी, मुडघोडा सिगा घाळी मंस, घोळिया बळद बीरी आख्या मे फिरं लागी । दोरी हुयोडी रोटी मायं बीरो आखो सोच टिकणो भरपूर फसल भरपोडो खळो, नाज रं बोझ सूं दबती गाडी बीरी आख्या माकर निसरवा लागगी । बाण चूकं खुडो कानी खुडको हुयो । बीरो घ्यान दूधजे वा लागी सास लेयो, भर राजू नं लेपर खुडो कानी चलीगी ।



महानगर रं लामा-लामा हावा नं आछी तरिया दिखावतो उपनगर मालवीय नगर । ई जुवै नगर भाय उवासी सेवता कतार मे ऊभा हाऊसिंग बोडं रा बण्योडा मकान है—घूळ सू ऊ मा करपोडा घोळप सूं चमकायोडा । बीच बीच कठं-कठं कच्चा टापरा है, जिका री इतियास आ मकाना तळं दब मेल्यो है . । इण बस्ती रं बीच मे अके छोटी सो माटी रो घर है । सिर पर जिणरं घास-फूस है । डील उवाडो है, इण जूनं पर मायं बारं ऊभा रुख छाती दे राखी है । फळसं कनं खेजडी है । अके-आघी पडपाडो उदास भूपडो है । भूपडो कनं खुडडी भर टंणा री अके टपरी है, सोना आ इज छान-भूपडा मायं छाती दिया वंठी है ।

खुडडी में सासु घर देवर रंवे । खाणो अठे सासु-बहू दोनू बणावे । टंणा री टपरी माय पाच जीव जो लुकाव—सोना उणरो घणी भर तीन टावर । कनं इज बीरं जेठ जिठाणी रा छान-भूपडा है ।

सोना रोटी बणा लीनी । डोकरी चून ओसण रंयो है । कनं जीवाराव वंठयो है । डोकरी नं देख गंरी सवेदना मे भर बो बोल्पा —"दो रोटी डोकरी मा नं ई पो र दे देयो तो के हाथ घस जावं ?" सोना की नी बोली । जीवा-राम री निजरघा सो री परात मे चून ओसणती डोकरी पर टिकणी । कोई राठ मू ऊगर उमर . . दो डो वेटा .. बहुवा ~ ... घर

मुठापो, बीरी घाँस्या साभी सँण म ऊभा हा । डोवरी भी ठबडू हुई घून पर जोर दे-दे बीन नरम करवा मे लाग गेली हो, घर जीवारा म री निजरपा मुहरता सबषा नँ मोळमँ ही । सोना रोटपा नँ घाली माय मेन टेंगा री टपरी बानी बलीगी ।

या डोवरी रँ बीचलोडँ बेटे री बहू ही । जीवारा म इए बस्ती मे हाऊ सिग बोडँ रँ मजानां ने भायोडो वा री ई बिरादरी रो हो । वो मुडुडी मे बँड्यो हो । बी रँ कर्न डोवरी रो छोटी ई छोटी बेटो ग्यारस्यो बँड्यो बापी में स्कूल रो काम करँ हो । वो ग्यारस्या कानी निजरपा फेरी घर बूझ्यो—बुणसी बलास मे पढे ?

ग्यारस्या री उमर कोई तेरा-चवदा साल री होगी ही । फीकँ चेरे सू लागतो वँ बचपन दोरी दिवसतां मे सू निसर रँयो है । जीवारा म फेरु डोवरी बानी निजरपा फेरी घर बूझ्यो—“सरचो किया चलावँ, डोकरी मा ।”

—‘रामजी चलावँ, घेठा ।’ रामजी पर जीवारा म नँ बिस्वास नीं हुयो वो फेरु वाल्यो—किया ?

—‘मायणरा घाम र ओ, ग्यारस्या बानी हाथ करती वा बोली, माय-सब्जी मेचँ ।

—बिता-व पीसा बच जावँ ?

इतरँ मे सोना पाछी घामगी । वाली इयां ई दिन तोही बरा, बचँ के । कोई थो-चार रुपिया, पण के बरा ।

— दो-च्यार रुपिया मे काम चाल जावँ ।”

—‘चालँ तो कोनी पण चलाणो पढे ।’ डाकरी बोली । सोना बँवँ ही—“म्हारो कोई जीणँ म जीणो है ।”

—‘दो-च्यार रुपिया ई . बस । वो मन ई मन बोल्थो घर बोलबालो हुषयो ।’

आज वो सुबै-सुबै सोना रँ काम सू ई भायो हो । उणरी पादोसए बीं नँ परेसान करँ ही । जद जीवारा म री बहू दिगुर्ग दूध लेवण नँ आई तो वा उण नँ कैया हो—राम, पिल्ली रँ पापा नँ पक्कायत अजज्यो . ।

□ □

तीन-च्यार बरसा पँली तो अठँ लोगा रा खेत हा, वँ अठँ मोकळा घान घर गबरी उगावता घर मजँ सू गुजरान चलावता पण बच । बर-

बादी !

भ्रंक दिन सहर ऊफण पडयो । समन्दर रो दाई बुहा लेयग्यो—सेत खळा भर रिजक-रोटी । सेता पर खट्या हुपग्या मकान ईमकान । हल भर खळा दबग्या भारं तन । दूर दूर ताई सेता रो नाम-निसान कोनी । हल सोतिये रो बात कठे । जठं हरयाळी रमती उठे भब सूना भाबहीण दूडा । धरती रा हिमायती उत्रइग्या । किरसाण साफ, जमीन साफ ।

इण उपनगर मे जठं मा लोगा रा छान-भूपडा है, वानं भी उठे सू हटा-वणं सातर कोरट में जी तोड कोसीसा चाल रंयी है । जठं नीं जाएं किताई बरसा सू भं लोग बस्योडा है उठे वानं भब रंवण भी नही दिमा जावैवा । जठं धारा पुरखा धापर गाढे पमीनं सू हेमाणी भेली वा भब विनास मे गुम जावैली सिरकार सहर भर भं लोग ।

धापरा धरा नं बचाइएण सारू भं लोग मुद्रायजी हाथा मे लिया कोरटा रं घक्कर लग य रंया है । पर भी के भं बचा सकसी धापरा धुरसाळा ? ?? धर ऊपर सू भठे भावण घाळा पट्या-लिह्या लोग धानं सतावै, लूण बुरव ।

सोना धापरी टाबरी रो प्रस्तित्व बचाएण रा जतन करं । उण रं देवर नं गरीबी मु डं मे घाल्या बंठी है । बी रो बस कोनी । जेठ भी गरीबी सू जूझ रंयो है । मास कळरं । ग्यारस्या सातर वा जीव जिण सारू भी पाडोस मे भाई ठुक राएण बंवे—बार बाढ ! लाजगू नी । मेरी भैत रं साडी रो मारी । बक्यो गिरग्यो । किताक दिन मायनं राखसी । बीरा छोरो लाठी त्रिया फिरं । ग्यारस्यो प्रायोडी भैस नं चिनेक घेर दीनी हो । देनी हुवैला पण राड के कोई हाथ-पण पोडा इज हुवै । डरा र राखएण रो कोसीसा । पाडोसी कोई बोल कोनी । हा मे हां करण सारू बीरी जात रो भेक बीरं ई डोळ रो धर । राड-गोधम । डाकरी नं लैर रा दिन याव आज्यावता । बीरी माह्या भर भावती । कदे तो वा सोचती इण बरबादी सू बचर कठे ई चनी जावै ।

□ □

भ्रंक दिन धरा रं मुडार्ग सू भेक गडक भी-भी कर परो चलयो गयो । धाधण रा बाबू (सोनारो घणी) धायो तो वा बोली—हाऊसिंग बोर्डे घाळो वो तोह्यो (जे ई एन नवल) धायो हो । करं हो—भं भोपडी भापडी उठा दिज्यो नही काल मै भखवा देवू ला ।

—‘भूमो हुषी वापडा’ टुकडो नाख देती । कोरट मे भी तो देवां हा । धो मुद्रायजी मा ताई ई पिल्यो है । वो निसकारो नाब्यो । बाबू रो मन किया ई

करे लागो । वो बँचें हो—ये दिन हा, राजू रो मा ! .. बाबू घटें बँठर चिनम पीवता. मा बने बँठर बलेवो घालती . भापां पाणत बरता घर मा रा हलो भावतो— घरें भाज्यावो, गेला बलेवो बरलो . घर भाज ! घेतें रं भादम्पां रो सुणणो बोरट रं चक्कर लगाणो, मार्या-मार्या मुह लटकाया मजूरी सातर फिरणो . 'बँवता-बँवता बाबू रो मळा भरपाया । रुभेडें गळें सू वो बोलेयो—' किया ई लागें पण के हूँ ' "

□ □

फळमें माघें रुभी सेजखी चिनेज सें हवा रं चहवें सू हात उठती । सोना रो सुभाव ई इसो ई हो । सदा गंद-गम्भीर घर सान्त रं वण भाळी रं भव बदे की-बदे की रो चरचावां मू बँचेनी रंयती । जिण घर माघें वा छाती दिया बँठी ही वो पगत डावो इज हो पण सोना रो वो मुरग हो, महल हो, सें की हो नीरो ।

डोकरी इण माटी रं घर रं चिनेज भी भांच नी भावण देती । भा बीरं परवार रो छाया ही, बीरी खुद रो जगा ही । हाऊसिग बोडें भाळा भावता तो वा वानें सुणा देवती—घानें चाय-पाणी रा पीता चाये तो सीधा-सादा माग लिया करो ... 'मकान' गिरावणो रो तो बात दूर ये इण रं हाथ भी नीं लगाय सकी . राज ई हार रंयो हे ई सू " वं डोकरी रं मुडें कानो देखबा लाग जावता ।

□ □

भाज पेसी ही । बाबू भाव र याद दिराई तो डोकरी बोली—बाबू देख ! भगवान भी ठालो बँड्यो आपणें भो के रोग लगायो हे बेमाता रा भी घ खर खूटग्या, बेटा इणी वास्तें ।" अंक हाथ सू भाख पूछ र वा बोली—जमी तो माता ही बेटा । बीरं जावता ई भाखो सहारो टूटग्यो । मुमीबता रा दू गर भाव र ऊभा हुयग्या कंवत कंता डोकरी रो भाख्या केरु गोलो हुयग्यो । भाख्या पूछ र वा बोली—'तू जा ।'

बाबू सू उठ्ठा नी गयो । डोकरी बोली—इया के कायरी लावे ! मनें ता छपन्या याद है । जोन्दा रंसी नर तो और बणासी घर । जिनत आपणा पिराण है, बेटा ।

सजळ भाख्या पूछ र बाबू गयो परो । बीरं जावता ई दुरगा भायगी । बाबू बीरं सदा ई मोणी मागी बँवतो, टावरिया दादो मा । किणो नें भो ठाह नी पडतो वं मा रो दा जात है । भावता ई वा बोली—दाखी काई करे है ?'

—'बँठी हू बाई भाज्या ।'

—'अब तो बैठणो ई बैठणो । खे तमे-म बी रें चली जावा । दुरगा कँपो । डोकरी बोली खेत री ता बान दूर बाइ अब तो टापरा री ई मड मेली है । घाज ही बाबू पत्नी पर गयो है ।'

—'म्हारें भी बै गया है, भाए । राम जाएँ मठे रेंवणो हुसो कं नी लामो सास लेयर वा बोली—अब तो राम है, कं राज है । फरू लामो सास लीनी भर बात बदनती यकी कँपो—सुण्यो है, ठुकराणी सोना रें लारें पड मेली है ।

'मादमी रें लारें पडवा मू बाऽ हुवे है, भाए आपणें ता राम ई लारें पड सेरवा है ।'

—'काई कंन है वा ?'

—'बैवे है—हथकड़ी पंर वू ली । माररयू म्हारें आदम्या मू हाए-पग लुडवावू नी ।'

—'दुपय छ पणें द्वाय्य पे पे चूड़ी है ? खान्दय्य । खरू ई पै इरदेव नें बँवू ली । यो राडरी मँस इज खोल लेज्यावँचो न रेंमी बाव तो न बाजसी बासरी । जे का-मों होर नें कह दि-यो तो बै राख नें समुठ्ठी नें ई उठा लेज्या-वँवा ।'

— आपणो काई लेंवे है बाई । बक-बक कर आपू भाव ई रेंजवासी ।

—नही भाए, गोलें रो गह जुना हुवे ।

यै बाता करती रेंयो ।



भूवा भरता काई करता । खेरीखटा नें मजूरी री खादत पडो । जू-जू बसती बसी बसती घाटा रा दिन फिरभा समझदार लोग मुरा दजगार दू ड लिया । डोकरी रा बेटा मुबै-स्याम दूध बेच लेवता बोच म सब्जा ले घा-ता वा दही बिलोतो ता लोग छाख भी नी छोडता घर भट्टदणी पीसा बट जावता, वें पुराणी व ता मूलबा लागम्या । पण अचाणकर भं क दिन वा पर गाज घाय र पडगी । रोवती-बिलखती साना भर बीरी पिआणी सामान भेज्यो करे ही । चौक राज रा अपसरों घर सिपाया मू भर मेल्यो है । अब बै मठे जावला, ओ मुवात । डोकरी नें गँरी झूठ घापी । वा बोली—म्हारी जमी लेयर पे म्हानें उरबाद कर दि-वा, फेर भी नी घाप्या । अब ये म्हारो घर खोमबा नें घाया हो ।। के मांगो हो म्हारें ? के चिरो है म्हे था मू —धारी सिरकार मू ?? घर द्वाडर म्हे रुठना फिरा ।।। ओ म्हारें मूमरोओ री घर है । मैं

इण मे परणी घाई घर पब बाढी जावूँली, कँय र बा सोटण उडाई घर बोली-
बाप रं मूँ पावणो जावो हों कं नदी !!!

सैं रो निजरभा डोकरी माथें सागगी । मँ ह्रेफ लिया देख रंया हा । जीवा-
राम रं दीमाग मे समन्दर हवो ना बावणो । नं रा उज्जळ-उछळ तिनारा बाटे
सागी । वो कँवें हो—मा ! सद्दर रं कितारें रंणो घर समन्दर रं कितारें रंणो
दोनूँ इकसार है . ।

इतरें मे राज रा सिपाई डोकरी रं हाथ मूँ लाठी पकड सीनी ।



“आज तो भोत बुरी अन्याय हुयगी बाबा !”

“के रै मगनू ?”

“पीरागा नै ओके साढ़ मार गेरघो, सकीना नै हिडकायोडी गडक लाय-
ग्यो घर बिचारै लाला कुली रा कसाईडो पग काट दोन्या—तेनूँ अस्पताल मे
है।”

“हे।” सूरजाराम रै चरै पर हैफ बढग्यो। बिलम हाथ मे पकडना वो
बोल्थो, “के बात हुयगी ही रै मगनू ?”

“ओ तो ठाह कोनी बाबा।”

“बडै तू रिगली तो नी करै है ?”

“बाबा, मै आपसू रिगली बरूँ ?”

“मै बेरो पाहर आनूँ हूँ दिला... बँवतो यकी या चाल पडघो।”



लिखमसर ! गणेशजी रो मिदर ! चौरागो ! ओ ही चौरस्तो है पीरागा
रो ठाई'घो। रेतूँ रो कुडी माथे काकरा पडघा है। दिखणाव बानी मुँह
करघा वो काकरा छुगघा मे लाग मेल्थो है—उछाई डोल। कमरघा मे
लगीटी है फगत।

कनो कर नीसरतो परतू ओके डबली पीसो कुडी माथे गेर जावै। ठग कै
री आवाज सू पीरागो रो ध्यान टूटै घर परतू पर जा टिकै। वो आवाज देवै—
ओ मोट्यार ! पाछो आये।

पीरागा री आवाज सुण र परतू कने आयग्यो।

पीरागो बोल्थो, “तेरी पीसो पाछो लेज्या। छोरा खातर बीज से जाई।”

“मेरै कने भीर पीसा है, बाबा।”

“होगी।” उठतो यकी वो बोल्थो, “ले !” पीसै नै वो परतू री हथेली
पर मेल दियो घर बोल्थो, “अब पट्टी दे।”

पगसू भीरै मुँडै बानी देखतो चल्या गयो। पीरागो पाछो आपरै बाम मे

लाग्यो । थोड़ी ताळ पछं बिहदू बनै कर नीसरया । पीरागा नै गाररा चुगना देख र बो बोल्थो, “बो के करै है पीरागा ?” ‘दीखै कोनी ! घात फुटेही है ?’ थोड़ो नरम पहतो बो फेर बोल्थो, “भाई भ्रं काकरा घरती री कोल मे रहवै ! मैं सार र भेडा कहै हूँ । घाता-जाता टाबरा रं पगा मे रूप जावै । छोरा ऊभाणा पगां भागै रं भाई !”

बिहदू बीरी बात ध्यान मू सुणं हो । जद बात पुरी हुयां पछं भी उणरो ध्यान नी छुट्यो तो पीरागा बोल्थो, ‘के सोच मे पहगो ? घरा जा भाई, टाबर रोट्या ग्यातर उडीरता होसी ।’

बिहदू चल्थो गयो । पण पीरागा री बात बी रं दिमाग मू गयी कानी । यो सोचता-सोचतो जावै हो ।

बिहदू रं गया पछं मूकली सेठाणो राबड़ी मू भरयोडो बचोडो हाथ मे लिपा घायर पडी हुययो । बनै ऊभी वा बँवै ही, “पीरागाजी, लपो राबड़ी पोल्थो !”

बिना बी कानी देख्या हूँ पीरागो बँयो, “भीतर रं बनै पडी हाड़ी मे घाल दे ।”

मूकली मिदर री पेडिया रं बनै पडी हाड़ी मे राबड़ी घाल दीनी घर पाछी घायर बूझी, “पीरागाजी भवकी बर तो लिखनी रं बापू नै गया भोत दिन हुयाया । कद घानी ?”

“परमू आजागी । कोई नै कदवे मचना भयो ?”

परमू आ जावैना ? वा मन ही मन सोचतो बोली, “माछयो” । वा भीर हुयी । गेल चालती वा सोच रंथी ही-इणरो मतलब तो ‘बै’ भीर हुयाया ! पीरागा री बात भूडी कोनी हुवै ।

मूकली रं पछं मिसराणी आई : खीर रो बाटको हाथ मे लिपा वा फँवै ही “लपा पीरागाजी खीर पोल्थो ।”

“हाड़ी मे घाल दे ।”

“हाड़ी मे पडी राबड़ी नै देख र मिसराणी बोनी,” इणुन तो राबड़ी है, पीरागाजी । पो होल्थो । काकरा तो पछं ही चुग लोजो ।”

“भागज्या ! आई है-खीर ले’र ! क्यूँ चोबो हथर मिनगो जणा बाना आजा लागयो दीखै ? कदवै काकरा पछे चुग लेज्यो !”

‘नाराज क्यूँ होगा, पीरागाजी ! आछयो ठिहाणो तो घायरी किरपा मू मिल्यो है ।’

“केरू बा हो बात ! रामजी रें सजाग न तू मेरी किरपा कहव । मे पैयो हो नी के भागज्या ।”

“भोजू कोनी बंधू पीरागाजी ।”

“तो हाडो मे घालज्या ।”

खीर ने राखडी मे घाल र मिसराणी बडबडावती चलीगी । ओ पीरागाजी भी वे पत्तो के भादमी है ? राखडी म ही खीर ! ----

दोपारी हुवे लागी । तेज तावडा ! पीरागो तावडे रो किलकी मे बूढी सामे बंठ्यो राखडी घर खीर मिना हाडो न जीव सू चाट हो ।

सडक मार्थ सकीना जाव हो । कारथे सू रग्योडा दात । सावलो चैरो । सिर पर उलझयोडा बाळ । कमर्या मे मंकी सलवार अर इसा ही मंलो कुरतो । पीरागा देख र कैयो, “सकीनडो, चेता सँ चालजे । तू पान रो पीक धूक धूक र सडक खराब करे है ।”

“क्यू ? सडक कीना रें बा रो है के ?”

“बोछो । तू पार बोल ।”

सकीना घामे चलीगी । पीरागो घामरें नाम मे लाग्यो । जद बा महावार पान घाळ रो दूगान मार्थे घाय र खडी हुई तो महावीर बोल्थो, “के चाये सकीना ।”

“पान ।”

“किता ?”

“भेक ।”

चूनो रगावतो महावीर तूझो, “बोई मेहपाणी रो भी आसार है, सकीना ?”

“भाज हील, खाल-नाळ सँ सही ।” सकीना बोल र चिमकी, जाग उए सू न कैयण आळी बात कैयोत्रगी हुवे । महावीर पान लगाय र देखो कैयो, “तो इण बात पर पान खा, सकीना ।”

सकीना गुम-भुम सी चान पडी । महावीर कमीज पेंर भट दुगान सू उतर्यो अर सट्टे आळा रें बने जाय पूग्यो । वो जी भर पीसा लगाया । विरखा रा भाव ऊचा हा ।

सट्टे मे पीसा लगाय र ज्यू ही महावीर घावे हा तो गेळ मे उएने दाना-धुत्ती मिलयो । महावीर बोल्थो, “असलाम अलेकुम ।”

“घानेकुम असलाम । क्यू भाज बोई विसेस बात है ने ?”

“घापरों महारानी चाहिजे ।”

‘घाज स्वाम नै हा जांयों । पण मित्रों मरीया नै घपा’र दूध पेडा
सुनाजे ।”

सूब ल्या ।

‘जणा जा ।’

महारों नै घाज मानममान हुयता लागे । वो सडर-सडर जायें हो ।
भूता घाजी गळी मू टावरा री घावाज घायें ही-लालाकुत्ती बावळाऽऽऽ ।
बादरोऽऽऽ ।

□ □

गूरज घापरों डेर कानी जायें हो । निगमसर पर घेक बादळी मडरायें
लागी । ज्यू ही हरा बीनै निचायी, छाटा चू पडी । भिर भिर २ री भडो
लगगी । पीरागा उछटो-बूडता रडो चौपड कानी घाय रंया हो । उगरे
मूडें मू घावाज नीसरें हो-घां ही घोऽऽ ।

चौपडिय कुनै री छतरी म तालाकुत्ती घर सरीना ऊभा छम-छम पडतें
पाणी कानी दगें हा । पीरागा री घावाज उणा रं काना म पूगें ही । या कनै
घावें हा ।

छतरी कानी लपकनै पीरागा नै सरीना कैंया, ‘घाज तो महावीर पान
घाळें रं गैरा होयग्या ।’

‘मरवा दिया, सकीनडी ।’

‘पण घब के होवें ?’

‘थे दोनू बदे मरवा र रंस्वो ।’

“मरै पीरागा । मीत तू के डरणी ? मीत तो घाज नी तो बाल घाणी
ही है ।’

‘पण बमाता येमीत बयू मरणी चावा हा ?’

‘कोई गरीब री भलो हो ज्वावें ता आपणा के जावें ?’

घां सट्टे घाळा भात बुरा हुवें, सकीनडी । बदे कोई मरगो, तो समझ
लीजये आपा भी मरगा ।

“कोई नी मारें । बा देख । बरखा धमगी । घावो चाला ।’

लालाकुत्ती पंला नीसर्यो, उगरे पछें सकीना । पीरागा छतरी मे ही बंट्यो
रंयो ।

□ □

घेक दिन पीरागा री बान मू घर लालाकुत्ती घर सकीना रं प्रचार मू

तीन मर्या-भेक साब, अके गडक अर अ न कताई । अर आज ? आज ताभेत बुरी अर्याप हुयगी । सूरजाराम मरता छ रँ आतां न्हय फूलजी कमाटर नें वृक्ष रेंयो हो-डागदर साब पीरामोsss ?”

वो पार पड़्यो, सूरज राम । फूलजी लामो सास लेरी ।

“पार पड़्यो ।”

‘हा ।’

“कठे आप रिगली तो नी बरो हो डागदर साब ?

तू कंडो बात करे, सूरजाराम ।”

‘सकीनाsss ?’

“बा भो पार पड़ी । जालाकुत्ती ठीक है पण बीरो पग काटए पड़्यो ।”

‘डागदर साब, आप बधा नी सक्या वाने ?’

‘बचावए आलो तो भगवान है सूरजाराम ।’

‘आप भी भगवान रो रूप हा, डागदर साब ।’

‘पण भगवान तो नी हू ?’

‘बड़ो बुरो हुयो सायsss !’ उणरो गळो भरयायो । वो बोल्हो, ‘पीरामा नें लोग गेलो कंवता पण वो गेलो नी हो डागदर साब । सास डोली छोड़ता वो बोल्हो, ‘बी रो कोल म घरतो माथे पड़्या काकरा रडकता । वाने वो सो र भेला करता । पण अमली काकरा बंद भेला हुया । आज भी बडके डागदर साब । आख पीछ र वो बारयो, ‘भोलो हा न, इए वास्त ई बी रो बात पिल जावती । पण लोग बीरें लारें पड़्या ।’

‘आ रमतें रामा रें कने के धर्यो हा ? पण लोग मार . ।’

‘साडी रो सोई उत्तारए आला वोनी डागदर साय । सुण्यो है, बडा लोग तो पाळें है वाने । । ।’

‘के पतो भाई ।’

‘पता न्यू नही डागदर साब । आव पनार र देखल्यो, सरीक प्रादमी दुलो है ।’

फूलजी बात बदलता थका बोल्हा, “हा अके बात है, पीरामो मरती टेम केंयो हा मेरें भाई सूरजा नें कह दीज्यो । बा भनं बाळें नही, गाड दे । . आ चाल ।’

सूरजाराम मू डो लटकाया फूलजी रें लारें हुयगयो ।

□□

फतपर आली सडक पर तादी वॉनेज है । उणरें उत्तराद बानी करता पीरामा रो सैनाणी अके चूतरो है । कने ही सहीना रो मजार है ।

लाला कुत्ती पीरागा रें चूतरें ननं नीनो नाड करवा बँडयो है । भ्राज आराम करण सारु उतावळा हुय रेंया ह । या देगो, छिजि रें बी पार ! मूरजी पग टेक दीन्या । बा बँडयो है— सळें ।

चूतरें सूनं आवाज गई लालाकुत्ती मूरजी छिपग्यो है !
हा पीरागा ।”

आवाज बद । अघारो बढ रेंया है । लाला कुत्ती चूतरें र सिर लगाया ऊ घा रेंयो है । चूतरो बोले—लाला कुत्ती सोचें है बँ ऊधें है ?

“जाग रेंयो हू, पीरागा ।”

“बी संतानियां रो काई हुयो ?”

‘मनं डर लागें पीरागा, तू बीरा नाव मतना ले ।’

इतरें जे मजार बोल पडें लालाकुत्ती, भव डरणं मू ये हुसी ? अं लोग सो संतानी करैना—ये रोक-टोक । भ्राज आरो जमानो है । व्यवस्थाही खराब है, लालाकुत्ती ।”

“उपाय बता ?”

“सुर रेंय बोलें मतना ।” मजार चुप हुगयी । चूतरों योंन पड्यो,

“हालताई रात बाकी है, लालाकुत्ती । सुबं री लाली री रग देख्यो है ?”

“हा ।”

“जद अँडो हुसी तद काम बणसी । चूतरों रेंय र चुप हुग्यो ।

लालाकुत्ती बँड्यो सुबं री बाट उडीक रेंयो है आत्र भी । घर रात ? भोत

है ।

□□

गुदड़ी रो दरद

‘वस भेक ही !’

सलमा रं कने वा भेक ही रोटी ही । घर वा रोटी वा हमीद री थाली मे मेल दीनी ।

खुदा-ना-खास्ता वो और रोटी कोनी मागी नहीं । हमीद रोटी खापर उठयो । सलीमा लामी सास लेयो ।

बं घर म तीन जणा हा—मिया, बीबी घर भेक टावरियो । टावरियो हालताई छोटी हो—दूध्यो पीतो । हमीद रा भमी-भरबा तो जद वो छोटी सो हो तद ही गुजरग्या हा भेक घर हो बीरं भ्रवाजान रो बणायोडी, बीनं करजं री भेक मे सेठ ले लियो । वो घापरी फूकी रं भठं पळयी हो । जद बीरो व्याव हुयो उण रं कोई दो बरसा पछं फूकी भी फोत हुयगी । इण रं पछं हमीद थक्का बस्ती मे भेक छोटे सँ जमी रं टुबडं पर काची ईटा रो भेक ढाजियो खडी कर लियो । जिण नं फाटखडा घर सीपा सू लाद र छाया कर लीनी । भेक छाटी सी खुड्डी खडी कर लीनी घर भठं रं वै लागो ।

कमावण नं तो बं दोनू मिया बीबी हो कमावता पण कमाई रो फगत नाव ही हो । घघो कोई खास नी हो । सलमा ऊन रो कोटड्या मे कतर करघा बरती । पण लारला प द्रा बीस दिना सू ऊन कमती भावणो सू उण नं भो पाम भी नही मिल रंयो हो । वा घरा बडी मन मसोसबो बरती ।

हमीद रो घघा भी मदो हा घर री हानत खस्ता ही ।

रोटी खापर वो ढाळिय मे भावयो । बमीन गळं माय घालतो यको वो कवं हो—वे करा । भक कानी तो घघो खुस्क दूजी कानी मियाइ । बाळ रो सिर फटं तो आ मियाई तो बमती हुवं । से बीजा मिंगी गरीब धादमी बीबर जोवं ?

सलमा की नी बोली । हमीद कमीज पेर र बीडो सितगई घर माचं माचं वंठ र मीवं लागो ।

वो कोई पचवीस—छवीस रं भठं गडं हुसी । सलमा उण सू पाच बरस

छोटी ही। पण उमर मे गरीबी रो दरद हो। सलमा न रात रा इन फगत भेक हो रोटी नसीब हुयी हो पण आज तो वा भी नही!!! वा टावरिये न गोदी मे लिया मार्च रे कने भागएँ मार्च बँठी हो। हमीद भाडो हुयग्यो। वो चुप हो पण गम्भीर हुयोडो चँरो की बोले हो। मार्च पर सडी सळगटा बोई गेरी चिन्ता रो कहाणी कँवे।

बीडी बूझायर वो उठयो। ऊभा हुवतो वो कँवे हो, “चालू, घाटे-दाळ रो जुगाड करू। हमीद बारं मायग्यो। ढाळिं रे साँरे ऊभी आपरी सुळी नुमा पान्नी रो बण्योडी मुदेवन दुःखान नें कायें मायें सीनी। तद वो चालवा लाग्यो तो लारें ऊभी सलमा कँवे ही—भावती वेळा भाटो पकायत लावज्यो। भावरें भाया हो .।”

वा भ भै बोलती, हमीद बीच मे ही बोल्यो, ‘आज तो घाटी ही के वेगम गोस भी लावूँला! मेळो है, सेठ सूं ठीकसिर सोशे सेयर निसरूँला तो ...। कँवतो-कँवतो वो बारें मायग्या।

सलमा उएने देखें ही। हमीद माँलया सू ओभळ दुवग्यो हो। पण सलमा रो भावणा चकें भी रास्तें पर लाग जेयी हो।



वा टावरिये नें मार्च पर मुवाय बरतण माज्या। खुड्डी बढ कर परी वा पार्छा ढाळिये माय भायर बँठगो।

उएरो ढाळियो बिया तो ढाळिया रा मजाक करे ही पण वो उएरो साँरो हो। वा बीरे ही तळें सिर लहुँसती।

लारलें पाच छ व दिना सू वा भाँने-पेट रँयर भी चुपचाप गिस्वी चलावें ही। वा इण बात रो ठाह तई भ परें खाबिन्द नें नीं हुवण दियो। रुखी, सूखी घर मुखी रँयर भी वा दिन काडें ही। पण भव भूख बीनें बस मे करे लागी, घर वा सघरंतर ही। चाण घूकें टावरियो रोवें लागी। वा बीदी मे ले लीह्यो बीनें घर बोश मुह मे दे दी-यो। गोडा हिला-हिला वा बीनें जरावें हो। पण भूमो टावर फगत हिलाणू सू ही पीकर चुप हुवतो? बोवा मे दूध कोनी। माया बिना दूध क्यानू भावें? जद सलमा नें गाली बोबा रो ख्याल घायो तो वा दरद सू भरीजगी। वा टावरिये नें कायें रे लगायर उठी। घडें रे कने गिल्टी रे मुचगोडो गिलास नें भर परी टावरिये रे मुहडें रे लगायो घर पाछो प्पार्व लागो बीनें। टावरियो सन्तोष सेयर चुप हुयग्या। ‘बडो स्याणो है’ कँवतो बीरे गिर पर हाथ फेरती पनी वा पाछी भायर सामो जगा बँठगो।

घोडी ताळ पछे टावरियो फेरू रोनें लागो। कोरें पाछी सू भूय कोबर दूभनी? उएरी खुराक बीरे बोवा मे कोनी हो। वा पीड मे बाठी भरी

ડ્યોઢી વહલાવે હો ડગનૈ—ગોર ગાર્દ— ગોર ગાર્દ પોડ્યા ! ગોર ગાર્દ—ગોર ગાર્દ પોડ્યા ! ઘા ચિટલી ! ઘા મિટસી ! ઘા લગ લગાવળી ! ઘા મેતો બતાવણી ધર ધો ઠોસો ! ! ધ્રેક—ધ્રેક ધ્રાગળી રો પિછાણ કરાવતો વા કંવે હી—ગોર ગોર્દ—ગોર ગાર્દ પોડ્યા

ટાવરિયે રો ધ્રાગળયા બોરે હાથ મેં હો । બી રો ધ્યાન પરે હુમગ્યો । વો જોરામરથી હી ચેલેં લાગો । ચેલતા—ચેલતા બીને નીંદ ધ્રાપગી । પળ સલમા વેંઠી હી । બી રો ધ્રાશ્યા મ સલાલવ દરદ ધ્રીગ્યો । વા બીનેં ચારેં ની નિસરવા દેણેં રા જતન કરેં હી । વી નેં શુદ રો તો ચિન્તા કો હો ની વળ ટાઢર નેં બિલ-લતા નેં દેલર વા માય હો માય ટૂટ જાવતો, કિળી નેં ઠાહ બી ની પઢતો ।

ધ્રાગળેં પર ધ્રાશ્યા લગાયા વા વેંઠી હી ધ્રર ચારેં પૂન કર—કર કંવે હી ।

□□

હમીદ સોદા લમર ધ્રાપરી 'દુકાન' માય તરતીવ સૂ જચાયો । પાછો સેઠ, રેં કરેં ધ્રાપર વો બોલ્યો, 'હા તો સેઠા કિત્તા રો હુમો સોદો ?' સેઠ કંવે હો, "પન્દ્રા રૂબિયા રા ઢબૂ પેતોસ રૂપિયા રા ચરમા, વીસ રૂપિયા રો પીપાઢી ધ્રર પચ્ચીવ રૂપિયા રા ડમરુ ઇળ તરિયા કુવ વિચ ણ મે રૂપિયા રો હુમો । 'ધ્રાપરી વહી વદ કરતા થકા વો બોલ્યો "ધ્રાજ તો મેલો હૈ, ઇત્તો માલ તો નિસર હી જાસો ।'

'વેલો, ઘલ્લા—મિયા ધ્રાજ તો દેલેગા હી ।' કંવતો થકા વો ડબૂ ફૂલા—ફૂલા ર ટામેં લાગો । દુકાન સજગી । રમ—ચિરગા ડબૂ ડપર ડહેં હા । ડણનેં કાર્થેં રેં લગાય ર વો ડઠાઈ ધ્રર ચાલ પઢ્યો । પીપાઢી રો ધ્રાવાજ ધ્રાવેં હી—વીsss ! વીsss) ।

ધ્રાકાસ બાદલા સૂ ધ્રરપોઢો । ડૂૂ હી પીપાઢી ચજાવતો વો ચોપરિયે કુવેં વનેં ધ્રાયો, જોર રો ધ્રાધી ધ્રાયગી । ધ્રર ધ્રાધી લારેં મેહ । હમીદ ધ્રાજ ર સામનેં પ્રેસ રેં દરુજેં માય ધ્રાપર ડમા હુમગ્યા । ધ્રચાર હી બીરો માલ યલ જાવતો વર્દે ડબૂ ફૂટ જાવતા ।

વરણા વરસેં લાગી । પ્રેસ રો મેટ લોગા સૂ ધ્રરીગ્યો । ધ્રાવણ માલ્યા કંવે—યોઢી ધ્રારી દુકાન નેં તો ધ્રેવ કાની કર બીરા ડમા તો હુવા । . .

હમીદ ધ્રાપરી દુકાન નેં મીત રેં ધ્રહા લીગી । ધ્રર શુદ બીરેં ધ્રાઈ ડમો હુમગ્યો । ઇતરેં મ બીરો ધ્રેક ધ્રાયનો ધ્રી(ધ્રાયગો । બી રેં હાથ મ હૈઢ—પમ્પ હો ધ્રર કાર્થેં સૂ હુવતો થતો ગલેં માય ધ્રેક ચેલો । હાથ મે વર્દે ફૂટ્યોઢા વર્દે ફૂલ્યોઢા ઠબૂ હા । વો હમીદ રેં વનેં ધ્રાયર લાડ્યો હુમગ્યો ।

પમ્પ ચેલેં માય ધ્રાલ વો ગોઝિયેં મેં સૂ બીઢી—માવીસ કાઢી ધ્રર હમીદ કાની કરતો થકો બોલ્યા, લ્યો હમીદ ચાઈ ।

हमीद दो बीड़ी सितगाई । अंक आपरें साथी न दे दीनी अर दूजी आपरें
होठा रें लगा सोनी । दोनुं वा रें मुंह मे धु वो हो । पण हमीद रें चंद पर पड़-
योड़ी चिन्ता रो लकीरा मुंहडें सूं निरसतें धुवें माय धुवें रें परवारें की भीर
भी बतावें हो । बीड़ी रो सुट सार र बीरो साथी लणन कैंयो," आज तो हमीद
भाई मेळो सूखो जातो लाग्यो ! सुणर हमीद चमक्यो । बी नें लाग्यो जाणें
कोई बीरें देयो हुवें । की समळ परा वो बोल्थो अल्ता-मिया के सिर लाज
सबीर ! अंक लामी सास लेयर वो फेरूं बोल्यो, 'मेहा तो बरस्यां भला, होणी
हो सो होय ! वो फेरू साप लेयी अर बोल्यो ' अटें ता हालताई बू हणी ही
को करी नी ! "

' मैं काई कर लियो । मुगकिन सूं अंक रुपिया रो रेजगी बणी हुयी ? "

'प्रवार धम जावें है ! दिया तो आज घाठ नी बज्जा ताई धयो हुयी । "

'तजरीर मे लिख्यो है वो तो कठें जावें कोनी, सबीर अर बिना लिख्योड़ो...." वो
धामें नी बोल सक्यो । बीरें मुंहडें रो धूक सूख्यो । उभा सोगा माय सूं कोई
बोल्यो, "रूकवा रो नाज हो मतना लेय बीरा, बाह्या फाटता-फाटता तो आज
निठ आयो है । बरसवा दे ।

"बाया !, म्हारें रोक्यो थोड़ी ही खूब, म्है तो बाता करां हा ...। "

"कोई छाछी बात करो, बीरा ! "

हमीद धामें नी बोल्यो । वो चुप हुयग्यो । गेट माथें ऊभा सोगा री बाह्या
सामें सहका माथें लाग मेली हो । सै री निजदूया माय बलण-बलण नजरियो हो ।
हमीद सोच मे डूब मेल्थो हो, सबीर सामें देवें हो ... ।

सिहया आयगी । बरस्या कोनी धमी । गेट माथें ऊभा सोग भोजता घरा
भी जावें लाग । थोड़ी ताळ पार्इ नी गेट मे फगत दो आदमी रियग्या—अंक
हमीद अर दूजो सबीर ।

सबीर बंरें हो—"हमीद भाई, धव तो घा दोरो ही धमती नायी । आज वो
मारमा गया । "

हमीद बोल्थो, "तू तो सूंवारा ही बी धंयो तो कर लियो हुगी, अटें तो
आज वो भी को कर मरयो नी । "

' नाम हुयग्यो हो ? '

"रमजान रो छोरो बेमार हो । धमपाळ नेवर गयो हो । "

"तो रमजान र ? "

' बारें गयोही है, हमीद बोल्थो—" जाई बरा गार आज जान कोटरपा
ध रम रो ऊन भी कोनी, मही चरमी भाभी ही बी ने घां ... ।

“कोई जोर ! किएन बंय दया ? सुएँ भी ब्रूण, हमीद भाई ?

हमीद भर सबोर सन्बर कियो ऊभा हा । पण बरखा पग नी छोड्या ।
बाखिर सबोर धीरज छोड दोन्यो । हमीद भाई भव तो चाखण मे ही सार है !
बरखा धमेली नी ।”

‘तू चात भई ! मैं तो बता बरसत मे किया चात सकू ? समान खराब
हुयग्यो तो सेठ रा पोसा कौकर चुकता ।

सबोर चल्थो गयो । प्रेस रे गेट माय ऊभो हमीद बरखा रे धमएँ री
बाट उठोके हो । पण आज तो इन्नर राजा घरती पर बंजा ही राबी हुय मेल्यो
हो ।

थोडी ताळ पछे चौकीदार आयग्यो । ओक सूँ दोय हुयग्या । चौकीदार
कँवे हो—बरखा माही ही धमै । लागे, आयणा रो भायोडा पावणो रातबासो
लेयर ही जाती ।”

“पण - ।” हमीद सू धाम नी बोलीज्यो । चौकीदार कँवे हो, “सामान
तो म्हारै कन मेलज्या, सूँवारै ले जाये ।”

“पण ... ! ! !”

चौकीदार कँवे हो, “जे बैम हुवे तो बात बांभी है ।

“नही चौकीदार साब ? बैम तो की भी कोनी पण.....!

“काई ?”

“आज.....कमाई कोनी हुयी ।”

“पोसा बाये ?”

“.....”

पोसा रो काई करती ? दुकाना तो बंद हुयगी ! इया कर, चून लेज्या ।
पण मयाने लेजासी ? सोचतो यकी वो फेरु बोल्थो, “इया कर, पीपो ही
लेज्या । रात रात तो काम चात जायी । सूँवारै री सूँवारै देखजे ।
सूँवारै री सूँवारै देखजे . कँवतो यकी वो माय सूँ चून आछो
पीपो उठ हमीद रे कन आपर बोल्थो, “ले, अबै देर मतना कर ! बरखा धमेली
नी । चूा रो पीपो हमीद री आख्या सभी हो । उणरै काना माय सलमा रा
संभ गूजे लामा .आवना चूा पक यत लेयर आवती । आपरै आयो ही ।

हमीद आपरी आख्या पोछी भर चूा रो पीपो लेयर बोल्ता, “सुवे पाछो
बर देख ला ! ’ य रो काम काड ।”

इन रो परवा मतना कर !

हमीद चल्थो गयो ।



बरखा सू गेना मे पाणी भरीज्यो हो । काधे माधे चून रो पीपो लिया
हमीद जावे हो भर बरखा राणी नाचै ही—भूम-भूमर । घरती पर रुगळै

पाणी हो पाणी हो ।

जद वो थरा भूग्यो तो सलमा टावरिये नै छती रं चेप्या ढालिये मे वंठी हो । टावरियो बिलरा-बिलरा रोखे हा । सनमा री घातइया माय दरद भर-योइो हो । हमीद ढालिये माय बढगो वंवे हो—घाज तो अल्ला मिया री मरजी हो घंङी हुयो, बाई करा । केर भी पूा तो ले आयो है ।

सलमा रं घुडे सू जवान नी उपडी । पीपो मेसर हमीद मार्चे मार्चे बैठ्या । वो वंवे हा, गुदडी माय तो पाणी मरग्यो हुसी । ज्यू ही बीने चुन्ने रो ध्यान आयो, वो बोल्यो, “रोटी बणणी तो दोरी है । लागे, घाज तो भूखा ही सोवणो पइसी ।

सलमा बोनी, “नही, मैं राटी पका लेवू ली । चिया पकासी ? क्या सू पकासी ? चुल्हो तो भीजग्यो घर नबड्या भी । वो सास लेयर बोल्यो, “वेगम घाज तो पून ही पाणी म घोळ र पो सवा । पंला तू पोले । टावर भूखो है ।

“नही, मैं रोटी बणा लवू । अठं ही ई टा मेन लेसू ।”

“पण बाळसी काई ?”

‘आ गुदडी ।

‘गुदडी !’

हा, अल्ला मिया और बणासी । कंदर बा टावरिये नै मार्चे पर सुवाय र ई ट लावण नै बारं चलीगी ।

सुखे मखबारा मे खबर छी—बीनीपर मे पैली बरखा । लोम चैन री सास लेयी ।

□□

थारें ब्याव रो बेस

अकेलें बेंठ्यें-बेंठ्यें रो जी अमूर्त लागो । मा तो उठ र चाही र कन बेंठगी, और कोई ही कोनी किण सू बात करतो । बापू खेत गयोडा हा । मुरली भायो तो बदे-बदास ही घरा आसा, वं खेत मे ही रंवता, भोजाई भी वारें साथें ही रंवती । गाव मे आदमी जावें तो कठें जावें ? सी घरां रो बस्ती न बजार पर न और की । जी घुटें लाग' तो सोच्यो खेन ही हो भावू ।

घरा सू वारें आयो तो कोई च्यार बज्या हा । आकास बादळा सू भर-पोडी हो । भादवें रो महिनो मनं अक दम जवान लाग्यो ।

गोवें-गोवें में चालें हो । सामनं खेजडिया न देख र मनं टाबरपणं री वाता याद भावें लागी-मैं अर मुरली भायो गाय डाडा नं लेपर अठीवर ही तो जावता ।चदी ताई अठें ही कठें भागली थनी म्हानें मिलती । ..राधा मुवा खारियो सिर पर लिया अठें ही भागं चालती दीखती । अतीत रं यथायं माय गुप्त्योडो जद में नरोदडा आळी जोहडी रं नेडं भायो तो सामें पसरपोडी जोहडी न देख र मनं याद भावें लागी-आ वा ही तो जोहवी है, जठें म्हे खेत सू पाणी रा घडो त्यावरण रं मिस अठें भाय र उहाया करता । ..अक दिन सिवकोरा पकड र मनं डूबोणो चायो ही नी । ..मैं आज समझू हूं वं सिव-कोरी मनं वयू डूबोणो चावती ही ।

जोहडी माय गेली-गेली में चालें हो । अचाणचक मेरी निजरया भागं चालता रिसाल साथें पडी । वा गुलाबी साडी ओढ मेली ही । मैं बीनं हेलो करणो-ओ रिसालss ।

। वा कोनी बोली । वा लारें मुड र पकायत देखी ही । मैं खाहतो-खाहतो पग उठावें लागो । इत्तो ही वेगी मनं जूनी बाता याद भावें ही मैं अर रिसाल तो टाबर पणं मे ओबरा बणाया करता । बीद-बीदणी रो ख्याल करता... वा आपरी मा रो ओढणी ओढ र बेंठया करती छोटी सी बीदणी । वा किती सोवणी लागनी ।

आज बरसा पड़े यकायक बान देख री मैं हेलो मारें लियो हो । पण वा स्थान दण वास्ते नी-तोनी दुखी के अब वा जुवान दुखी है, का फेर म ले-

मैं या घोंक ठाकर री बेटी है, का फेर इए वास्तं मैं गांव रो असर डेल सूं
उतरघो कोनी, स्यात चिप मेल्यो है ।

मैं चाल र धीरं नैं आयग्यो । म्हारें दीभाग मांय उठती अम्दाजी वातां
सूं मुगती पातो मैं बोल्पो, “रिसाल मैं तनं हेलो करघो डो नी, तूं बोली नयूं
कोनी ?”

वा फेरूं कोनी बोली । मैं बीरें सामं चालतो यको कैयो, “के तूं गुंगी
हुयगो ?”

वा बिना म्हारें कानी देख्या, हखी सी बोली, “बो देख, थारो खेत ! जा
मनं डिस्टवं मनना कर ।”

“तो तूं कीं सोचती चालै है ?” मैं बोल्पो, ‘मैं बतावूं, तूं कोई सोचें
है ?’ मैं बिना उए रो हूकारो लिया हो बोले लागो, “वा ही नी, भागणं टावर
पणं री बाता ! भागो ओवरा बणाया करता । मैं बीद बणतो घर तूं.....।

‘ईडियट ।’

धीरे मुंडें कानी देखतो यको मैं बोल्पो, “अंगरेजी मनं भी आवें है,
रिसाल । मैं भी यूनिपरसिटी मे पढूं हूं ।”

‘तो मैं काई करूं ।’

“बो ही जो सरीक मिनख करं ।”

“तो के तूं मनं हैवान समझ मेली है ?”

“मिनख तो नही । तूं अंक ठाकर री बेटी है नी, इएी वास्तं थारें सब्दा
माय सामन्तीपणं री वृ आवें, घर”

“अर थारें सब्दा माय मटका री राख, नयूं कं थारो बापू मटका बणावें है
नी, इए वास्तं ।”

‘बकवास मतना कर रिसाल ।’

‘मैं तनं बकवास करण सारु ‘इनवाइट’ (न्यूंतो) कोनी करी ही । ओ
पडघो गेली, अर जा ।’

मैं धन्यवाद कह दियो दीने ।

मैं भागं निसरग्यो । वा म्हारें सारें-सारें आवें ही घरसू आळी कुई रं ननं
बीरो खेत हो—म्हारें खेत सूं फल्लगो ।

वाता सूं म्हारो दीभाग अर मेल्यो हो । रिसाल बडें बाप री बेटी है ।...
पढगी के, अणणं भाप नैं तीस बारखा समझवा नायगो ।.... .. थोथी अकड
दोखावें । .. अब कठें है ठकुराई ! बडें बाप री बेटी ही तो पाळी नयूं
भायो ? ... लेय आवती सात घोडा री बग्गी ! रस्सी बळगी पण बळ कोनी
गयो....

म्हारो खेत भायगो । मै मुडगो । रिसाल भागीनै निसरगो । पण उण रो गुलाबी साक्षो रो चिमक अबै भी म्हारो भाइया माय चुमै हो ।

म्हारै काना माय अचाणचक सुणीज्यो—सालजी, ये कद भाया ?”

मै चिमक्यो । चिनेक समझतो यको बोल्थो, “भाज सू वारा हो भायो हो भाभी । पण या सिर पर खारियो लिया कठै जावो हो ?”

“मै अर थारो भाई भाज बिडदसर जास्या ।”

“क्यू ?”

“सावरिया रै छोरो हुयो हैं ।”

‘सावर जो रै लडको हुयो है । गई साल तो ब्याव ही हुयो हो ।’

‘तो के । थारो ब्याव हुज्यावतो तो क थारै नी हुज्यावता ।’

‘नी-नी ।’

‘थारो भाई तो थारो सगाई ककमण सू करावणै रो सोच रेंया है ।’

“थारो भालू सू ।” मै पलट भर माय ही सोवस्थो—वा अलपड गवार मेरी बहु बणैली ? मै पलट र बोल्थो, “करावो तो सरी, झूठी बाता करो ।”

“थे भाज ताई हा ही कद करो ? भाज बंथी हो तो समझल्यो सगाई पक्की ।”

“तही भाभी । मनै अवार ब्याव-सगाई सू काई लेवणो । अक साल और पढल्यू, इण रै पछै कैवू ला ।”

‘अक स ल ठैर जासा, सगाई तरे कराल्यो ।’

‘ना भई । मनै तो अँ झुझट भाछा को लागैनी ।’ सामै मुरली भाया नै भावता देख र मै बोलवातो हुयग्यो । भाभी भागै निसरगो ।

भायो कनै भायर कैयो, ‘बिजू मै तो भाज सासरँ जा रहथो ह, तू मा ही पयो तो रात रात खेन मे रह जाजे बापू अक दसोटण मे जावैला ।’

मै चिमक कर कँवू “घठै अकसा ।”

“क्यू पैला कोनी रेंवतो ।”

मनै पाद भावै, हा, पैला तो मै अँ कलो ही सोया करतो घठै । च्यार सू टा गाड र .घास रो माचो बत्रा र । मै कँवू, “पण अय कोनी रेंयो जावै भाया ।”

“अय क्यू कोनी रेंयो जावै ? तनै तो अँ कलो रेंवणो रो भाछो अम्बास है ।’

“मै समग्यो । को नी बोल्थो । भायो मनै कँवता भागै जावै हा, “बादल-वाई हो रो है, माँचो माय घाल लीजे । माय कामठ पढी है, थोठ लीजे ।

“घोर की भी है ?”

“गुदड़ो ।”

“इया कर, कामल मने दे दे भर गुदड़ो काढ़ र तू ओढ़ ले ।”

“बयू ?”

“तू गुदड़ो ओढ़ ले ।”

मने दया आयगी । मैं कामल दे हीनी बीने । वा ओढ़ र अंक कानी ऊभी हूयगी ।

मैं बीने माचें मायें बैठण सारू कंबू । पण वा जबाब देवें— ‘भवार बरखा भम जावें है, मैं चली जासूँ ।’

“मेह तो तू सावें है ! किया जासी ? आयण रा आयोड़ी पावणो जीम-जूठ र ही जावें ।”

जीसा (बापू) दूँदसी न, मने ।”

“फेर तू चली जा ।”

“दिरखा वरतें है नी !”

“वा तो है ।”

“तू चिनेक बासते बाळ नी, मने सी लाग रेंयो है ।”

“दिया सळाई रो ठिकाणो कोनी । के ठाह, वं कठे राखें ?”

वा भापू भाप माचें मायें भायर बैठगी भर कंयें लागी, “घारली गुदड़ो ओढ़ा दे ।”

“फेर मैं के ओढ़ू ?”

“भायो तू ओढ़ लीजे । देख ! कामल माळी हुयगी ।”

“तू सगळा गामा सीला करसी । इया कर, तेरी साडी उतार र सूखा दे, नही मैं रात मैं भठे ठह मे मर जावू ला ।”

रिसाल चिमकती थकी बोली—“ईडियट ।”

“सरदी मे कामल देयर घाली करायी, बीं रो इनाम ईडियट ?”

वा नी बोली । बीजळी र प्रकाश भाय उणरें डोल रो कंपकंपी मने कदे दीख जावें । मैं भी कांप हो । वा कंयें ही मने, “बिजू मने गुदड़ो दे दे, कामल तू ओढ़ ले ।”

“गुदड़ो गीलो हूय्यो तो ?”

“कोनी हूवें ।”

मैं कामल ले लीरी । वा गुदड़ो ओढ़ र बैठ जावें । मैं कंबू, “गीली साडी उतार दे ।”

“पेरसू के ?”

बीजली चिमकण रं समचं मेरो ध्यान बापू री फाट्योडी घोती कानी गयो । मे उठ र उतारु घर उण कानी करतो कंनू, ‘आ बापू री घोती है, इणनं लपेट ले ।’

‘वा उठी तो मैं बीनं कामल दे दीनी । वा आपरो पेटीकोट घर साडी उतार र सूखा देवं । बापू री फाट्योडी घोती माय भेली हुय र वा गुदई माय प्राय र ल्हुक जावं । ज्यू ही घाली कामल म्हारं लागं, मैं वंनू, ‘इणनं तो सूखा दे ।’

वा लाट रं पाया माथं गेर देवं बीनं ।

आधो-आधो गुदहो घाट्या म्ह बरखा रं घमणं री बाट उडीव रंया हा । घर बरखा ? तज हुवतो जावं ही । बारं बाजरं रं घूटासू उपडती तडा-तडा री घाघाज घोर तावली हुवती जावं जावं ही ।

ज्यू ही घीरो घालो बनाऊज म्हारं डोल रं अई, मैं वंनू, ‘मो गीलो बनाऊज भी खोल दें । म्हारा बुसरट पंरलं ।’

म घरं माय वा म्हारं सू बुसरट लेयर बनाऊज खोन देवं ।

बारं बरखा सू साय रंभी है । काफी टम हुयगो । बरखा कोना घमी । रिसाल म्हारं डोल रं चिपी चंटी है । मनं नीद आवं लागी । स्यात बीनं भी लटका आवं हा ।

अचाणचक बीजली पडबा री आवाज सुणीजी । म्ह चिमक्या । रिसाल मनं पकड्या सुणं ही-आकास गू ज रंयो हो ।

□□

बरखा घमगी । वा आपरी घीनी लपटती चकी कंवं ही, ‘जे तू नी हुवतो तो मैं आज मर जावती बिजू ।’

‘चालो तू जीवती तो बचगी ।’

साडी बाध परी वा कंवं, ‘तू मनं छोड आव ।’ मैं बीरं साथे हो प्गवू । वा कामल घाट्या चालं ही घर मैं बुसरट माय कापं हा । जद म्ह जोहडी मे भामा तो सार्म बटरी री चानणो आवतो दीरयो । रिसाल कंवं ही, स्यात जीसा आवं है । मैं संमग्या । बेटरी निया वो मादनी नेई आवगो । मैं पिछाण जावू बीनं । वो कंवं, ‘इणनं कठं ल्हुका मेनो ही तू ? मैं उरखा मे डू डनो-डू डता भासता हुयगो ।’

रिसालू बीच में ही बोलगी । मेरो पिंठ छुट्यो । वा कैंवें ही, जीसा प्राज तो बिजू हो बचायो मनै, नहीं ठड में मर जावती ।

सैतानसिध बेटरी रो घानणो मेर-मेर र रिसाल नै सावळ देख रेंयो हो । मै सोच रेंयो हो, कठै पोल नी खुल जावै ।”

देख दिखाय र कैं आवरै घरा चल्या गया । मै म्हारै घरा घायग्यो । किवाड खडखडाया तो बापू भारै आया । किवाड खोना था कैं बूझो, ‘घायग्यो क्या ?’

“बरखा में काई करतो, बापू ।”

“गाय ठाड़ा बह गया तो ?”

“कोनी बड़े ।”

मैं कापतो थकी माय घायग्यो । बापू किवाड पाछा जड़ ली-या ।

माखो गांव सणक-पण र सोई हो पण म्हारी प्राम्मा सुरी ही ।



बी दिन गांव रेंयर मैं पाछो जेंदुर प्राम्मा । अरु दिन मैं प्राप्ति नू माय रिसाल रो कागद मिल्यो । मै उत्पुक्कावण उगुरै खोर पड़ लागी । वा कैंवें ही—प्रिय बिजू,

म्हारी कानी सू स्नेहालिंगन स्वीकारजे । बी दिन खेन झाली बात रें पछै नी जाणै मयू बेचैनी सी रेंवै ? की ठाह नी । पढाई में भी मन कोनी लागै ।... ..

तनै ठाह है राजपूनी हमेश अक वर करै रिसाल भव दूरी काया रो सुख नहीं लेवैली । मैं जाणूं ओ कठण काम है । मयू कैं जातिया री भीता ऊभी है भाषा रें बिचै । तू दिन मतना जाये, नहीं मैं।

धारी ही

रिसाल

म्हारी झालिया रें सानै गांव पूवरो निबर्ता रह्यो । अकालाव दिन मैं पालै हो ।

होस्टल में भावर दुरबी मावै बैठगो । सावन देख पड़ी है उगुरै सर-काम र लिसबा लाग्यो—

प्रिय रिसाल,

पारो वापद मिल्यो । तू जिनी बाना लिखी बी पर बिचार करू तो

सागे, थारो बापू कोनी मानेला । राजपूत आपरी बेटी कुम्हार नै नही देवेला । तूं थारो बिचार ही बदल लीजे । इणु बिषय पर बाकी बात तो मित्या ही संभव हुय सके ।

म्हारो कागद पुग्गो वीरै दूबरै ही दिन रिसाल जंपुर आयगी । वा मन मलास सू बारै निसरत नै येट माथै मिली ही । म्हे उठै सू एन. आर. एस. सी. प्रायग्वा ।

बरै नै काँपी सारू कैय र म्हे वाता मे लाग्ग्या । रिसाल आपरी बात माथे भडिग ही । वा साफ कह दियो हो—जद राजपूत आपरी बेटी भुसळमान नै देय सकै तो कुम्हार नै देयलै मे काई भडबण हे ? बात इनी सी हे बिजू के ब्याव गांव मे कोनी दुबै । मतना होवा द्यो । पण पढाई पूरी हुया पछै इणनै कोई नी रोक सकै । सदिस कराला तो वारै ही रेवणो पडैला ! उठै ही कठै घर बसा लेवाला ।”

मैं कैयो, “म्हारै परवार कानी मूं तो विणी तरै री बाधा नी हे, रिसाल, थारो जीसा नी म नैला ।”

“तो के ब्याव नही हुय सकै ?”

“मा-बाप रो आभिरवाद तो लेवणो ही चाहिजै ।”

“बिजू, जठै नासमझी हद पार कर जायै, घर लक्ष्म दूटतो निजदूया पढे, उठै भैंड आभिरवाद रो बात करणो घर कहणो समझ मूं परै री बात है ।”

“तनै ही मोचणी है भैं बाता !”

“मैं मोच नीनी है ।”

“तो ठीक है ।”

रिसाल आयगा री बस मूं पाछी जोधपुर चलीगी । मैं बस पर छोड र आया हो बीनै ।

दीवाळी पर म्हे दोनू गाव आया । बात कूटी तो गाव मे हाडो फूटायो । रिसाल आपरै बापू नै बात न्हदी ही । म्हारै बापू रो जीणो दोरो हुयग्यो । राजपूत म्हारै डरा-घमका रेंवा हा । रिसाल नै समझा रेंवा हा ।

सैतानसिध मन गेलै मे टकरग्या । मैं मनै कैयो—बपू राजपूरा रो जवाई यणणो पार्वे ?” या री आग्या माय विरोध हो ।

“बाप गळन गोभो हो, ठावर गाव !”

“बाता यणार्थ ? वो री आवाज मे यणु ती मरड हो । मैं बोलतो दारै मे भयो जावो आग्या । चैं बीच मे गडना यतां बोला, “जाई यान है, ठावर गाव ?”

“बात जाई है ! यो राजपूता रों जवाई यणवा री सोप रेंयो है । दारै मैं समझा दीग्यो, नही —.....।

"नहीं काई ?"

"भारुषा काढ लेवू ला ।"

रुघो काको कोनी बोल्या । सैनानपिष म्हारें कानी देखता यका चल्या गया । वारें गया पछे रुघो काको मनै कँयो, "बिजू ओ बाम तो पटावे जणा ही मजो भावै ।"

कियां काका ?"

'अ' राजपूत दूसरा री भाए-बेटिया नें भोत खराब करी है, बिजू ।"

"पण मैं जाने खराब नहीं करू ला, काका ।"

"की भी हवो, तू ब्याय कर ।"

गाव नें रुबलनो छोड र म्ह आयग्या । रिसाल जोधपुर चलीगी अर में जैपुर आयग्यो ।

□□

एम ए बर्यो पछे रिसालरी नीकरी जोधपुर बिस्व विद्यालै म ही लागगी । मैं भी अठे ही लाग्यो ।

जद म्हे 'कोर्ट मैरीज' करी तो गाव बाता सू भरग्यो । म्हारें कनै तरें तरें रा समाचार पूगै लाग्ता । जद म्हारें बापू री मौत रो समाचार आयो तो मैं रिसाल नें लेयर गाव आयग्यो ।

बस सू उतर र जद म्हे परा कानी जावे हा तो खुगाया म्हान बाडा चढी देलें ही, अर गाव माय अजोब सीक चुपी छाप मेली ही । आदमी आपरें बारणा माय खड्मा म्हानें देसैं हा परा कोई की नी कँवें हो । म्हे चाल र घरा भायगा । घरा न भाभी मिली न भाई । मैं अठी-उठीन देखा-कोई घरा कोनी । ज्यू ही मैं मोडघाळें ठालियें कोनी गयो तो किवाड खुला हा । माय भांग्यो तो कोई कीनी दीन्थो । मैं माय आयग्यो । रिसाल भी आयगी । ज्यू ही कुणें मे मावें मायें सूती मा पर मेरी निजर पढी तो मैं देखतो देखतो रँगग्या । मा रें प्रालैं डील मायें पलास्टर बघ मेल्यो हो । म्हारें मू डै सू निवर्यो —मा, ओ के ?

मा रा हाठ खुल्ता । बा बोली "घारें ब्याव रो बेस है बेटा । मा री बोली रें सार्थ दरद निसर्यो । बा कँवें ही, "घारें बापू नंरिसाल रा जीसा मार दीन्थो ..बिजू । . ज्ञान सू मार दीन्हा ।" बा मुहफोर र रोवता घका कँयो, "मुरली अर चिरी बहू असात ल मे हैरिसाल रें जीसा नें पुलीस आळा लेयग्या ।"

मा री आरथों सू दग दग पाखो वेंवें हो । मैं अर रिसाल देख रँपा हो—
श्री धर्म दर्शन नं ।

□□

तावटे मे ठड हो । घडी कानी निजर गई—नी वजन घाळी ही । मचाण-चक ध्यान भायो, घाज तो मूनियन री मीटिंग है । ... वेगो जावण री सोवतो पको में हेलो करघो—पाणी सातो हुयग्यो के ?

स्टोव रं सू साटं मे म्हारो हेसो स्यात पिल्ली री मा नं सुणीग्यो कोनी । में उयलं नं उडीकत्तो रंयो पण जबाब कोनी मिल्यो । कुडतो उतार र में तोळियो लपेटघो अर बारं भावण लाग्यो तो सुणीज्यो—ज्हात्यो ! सदराणी है ।

“गरम कोनी करघो ?” में कनं भाय बूझ्यो । जबाब मिल्यो, “स्टोव मे रोटी घणावण जोमो ही तेल है ।”

“घोडी निवायो ही कर देता ।”

“भाज-भाज तो न्हात्यो ! के है घेव र मी लागमी केर घालं दिन डील सोरो रंती ।

पिल्ली री मा री बोली म घर री मजबूरी बोली । में बोलवालो वाल्टी उठा सीनी । ज्यू ही चौक मे भायो बारं सू भावाज भाई—रोटी-पीसा देवो जीsss !

सिणगारी मंतराणी री भावाज ही मा । पिल्ली री मा नं ठड मे लिप-टघोडी भा बोनी स्यात सुणीजी कोनी । जद दहूजं भायें कोई ती भायो तो वा भोजू बोनी—घोडी तो म्हारो भी सुनीsss ! . पीसा-रोटी देवो ... ।

मे सिर पर पाणी री लोरो येरघो तो डील मे घेक दम घडघडी उठी । की तो पाणी ठडी हो अर की हवा नी । ज्यू ही दूसरो सोदो ऊधावण लाग्यो तो कोजी सी भावाज सुणीजन लाग्यो—भाई है राड रोटी-पीसा मागण नं । घर रं सामं तो घालं दिन कूटळा पडघो रंवं । नवा रा पीसा ? पिल्ली री मा इण नं की मतना दीज्यो । .

मनं पिल्ली री मा री भावाज सुणीजी—भाई बात है ? ब्यू सू वारं—सू वारं रोळा करा हो ?

बयारारोळ बरू हूं, की नरम पडती या बोली, "भा रांड रोजीना रोटी तो लेज्माव घर बाम कोनी करं घेलं रो ।

'तो कुण बरं ? भापा तो बरा कोनी । बिचारी मैलो उठायं रोटी-पीसा तो मार्ग ही ।

"इण नं कोई रोटी-पीसा नी देवणा है, हूं । जे देया तो ठीक नी, है, हा ।" या गू जी ।

मैं तोळियो सपेटघा ही बारें घायघो । मनं देख र मकान मालकण घोडी भेली हुयी । मैं देख्यो, उण रा यिघावापणूं रा नाभा खीर-खीर हुयोडा बीरं बील रं चिम्बोडा हा । गरीबी री घूळ बीरं नाभा मांय रम्पोडी ही । या मनं कैवण लागी—देखो जो पिलनी रा पापा, जे यां, इण नं पीसा देया ता माछी बात नी हुवेली ! मैं इण नं कोई भाव ही घर मे नी बडण देयू सी । ..

'ता किण नं बडवा देख्यो' मैं बीच म ही बोल्हो, "भग्या मे बडो भो को है । भो भापा नै बघाम सेवला । पाखाना बरू है, घर सिहवा लाग जावेली ।"

"मिडो भलो हो । परा मैं इण नं तो कोनी बडवा दयू ?"

"पण बयू ?"

"भा रांड नी तो घाछी तरियां पाखाना साफ करं घर नी ही भाडू काढे ।"

मैं बोलतो जिकं सूं पंसा ही मकान-मालकण रो छोरी मुळियो घायघो घर दूवं लागो—मास्टर जी ! जे भाप इण री लड सारी तो बटं खीर जगा आप र देखो । इण घर मे तो मेरी मा बंभी उणी तरिया हुसी । ..

मुळियं री बात म्हाने अखरी । पण मैं बी टिघर रं बरोबर नी हुवणो घायो । मैं बीनं समझ तो यको बोल्हो, 'भा कोई लड सारणं घाछी बात कोनी मूळा । मैं तो कैयू हूं के जे दूवो मैतराणी नी घाई तो काई हाल हुवला ?

भो की नी बोल्हो ।

मुळियो भो मास्टरजी बज्जो जड कि मैं मास्टर हूं कोनी ।

सिंगमारी चुगबाप भा री बात सुणयो करी । अख उण सूं रंयो नी गयो या रीसा बळनी बालो, "दूसरी मैतराणी लया र ता बेरो पाडो । देखयूं दिला म्हारं रंता कुण भाव ? पी .ा देवणा पडयो । मैलो उठायो है महीने भोक ताई हराम रा कोनी मागू !"

'घारो फार है !' मुळियं री मा री बोली म तानो ही ।

ता पीसा वे । बयार महीना रा तो तेरं हक रा घाज ताई कोनी दिया मय न्यारी बाले है । मैतरां रा पीसा खाया तो कीड़ा पडला-कीड़ा !

मुळियं री म मुणता ही उछळी । जमी सूं दगड उठा र बगावती बोनी

“ले रोड, तर्न तो में बतानूँ !”

सिएगारी भाइ भूँचारधो । बा बचगो । मूळिये री मा माय भाजी घर रात री बाल्टी लाय र सिएगारी पर धंधा दोनी ।

राय सू भरिज्योडी सिएगारी छुटपं मु टं गाळ बाटं । मूळियो लाठी रा पूतां सू उण ने वारं बाटं । में आन र लाठी पकड़ो घर कंयो, “इया काइ मोवा पणो करे ! बापडो रं लाग जागी !” केर भो बो नी मान्यो तो में लाठी तोत परं बगा दीनी ।

सिएगारी बंचे हो—देखल्यो, बाबू आ गया—गुजरघा का करतब ! के गत विगाडी है मेरी ! बा सही गामा भाई ही । माय ऊभी मूळिये री मा घिर-छावे ही, “गत तो रोड विगाडी के है, भोजूँ विगड सी । तर्न भोत दिन हुयग्या तिर मे राय—राखडी राखती नै ?”

बारं मैतराण्या भेली हुयगो । अब तेरा कै मेरा ! दोनूँ बानी सू कोजी-मोजी गाळपा बरसं लागी ।

माय ऊभा किरायेदार तमासो देखे हा । में माय आयायो । कमरं मे आय र गामा पंरं लागो । म्हारो रुग-रुग सडधो हुयग्यो हो—सी पूँ ।

जद में ओफिस जावण लाग्यो तो मैतराण्या भेली ऊभी सिएगारी बड-बडाटा करे हो—ई राख री तो दुरगतो करणी ही है !”

में मोजिये मे सू हाथ काढतो वीरं कनै आय र बोल्यो, “मं ले पारा पीसा ! अबार गरमा-गरमो हुयोडी है, सिझ्या बात कहूं ला । अब तूँ जा !”

उण रो अपमान उण रं चंरं पर भावतो हो । में आरं नितरग्यो । पण उण री बात म्हारं दीमाग सू गयी कोनी । बर-बर में उण री चंरो म्हारी आदयां सामं आवें हो ।... मूळिये री मा सडोवडी है । आये दिन बापडी सू लई । ...पीसा मार्ग तो, नी तो खुद देवें घर नी किरायेदारो नै देखण दें । छेकड तो सिएगारी रं भी पेट है । बा भी मिनख है ।.. उण रं भी टाबर है मूळिये री मा भी गरीब है ।.. दोनू गरीब !!! मूळिये री मा किराये सू पेट भरं । मूळियो तो काम करे न काज, आवेवं साड रो ज्यू दिन भर घडी उठी नै फिरतो फिरं । सिएगारी सू भी माडी हावत है मूळिये री मा री ! पण आ बडो जात री है अर सिएगारी—मगन । पूरं महीनं मैलो उठावे जद पण हाथ माई, तो मिले काई ? दो रूपिया । घर वं भी नही !!!

मूळिये री मा रो बुझ्योडी चंरो म्हारो आरया सामं आयो ।...तळ तळ छुलनी चामडो ।... म्हारं बाना मे वीरी ऊचो आवाज सुणिअण लागी—राख

गत तो बिगाड़ी के है भोजू बिगाड़सू ।—

ओ कोई समाप्तो है ? गरीब-गरीब न क्यूँ खावे ? क्यूँ सतावे वो भापो
भाप न ? चाण चुकें मन ध्यान भावे—भाक्सं गरीब-गरीब री राह कोनी देखी
रयात बात जणा ही उण रें ध्यान मे कोनी भाई ? गरीब री फगत अंक जात
है .. गरीब ! इण री जात क्यूँ ? भाक्सं . गरीब ! गरीब भाक्सं !

भागें मोड मार्थ साईकिल लिया मन अस्थानो मिलग्यो । वो कैयो—भाब
कामरेड, सारें बैठ !

मैं भाज र साईकिल रें सारें बैठग्यो । पण करडो सीट रो दरद हुवे हा
म्हारें । अस्थानो कैवे हो—घाज प्रतिश्रियावादिवा सू सीधो मुफायलो है । मैं
लोग भावा रो बात रो विरोध करेला । स्लाळा सरकारी टुकड़ा मार्थ पळें । ..

मैं सुणतो रेंगो । जद ओफिस घायपो तो मैं उनरग्यो अर अस्थानो भी ।
वो साईकिल नडो कर र म्हारें साथें हुयग्यो । ओफिस मे भाय र म्हे बासी रजि-
स्टर मे दसलत करघा अर भागें निसरणा । म्हारा ही साथी लोग वंडया हा
भागें । सामें गडमेली पुराणी फाईला पडो हो गरद बढयोडी ही पाना मार्थ ।
साथें ही जाणें कदे भागें कोई छेडी ही कोनी ।

म्हारें दीमाग मे अर्ब भी सिणगारी घूमें हो—राख सू भरी । दिमाग मे
दरद तो हुवण लागग्यो । अस्थानो कैवे हो—भाबो कामरेड, यूनियन ओफिस
चाला ।" मैं सागें हुयग्यो ।

ज्यूँ ही म्हे ओफिस सूनं वारें भाया तो विरोधी यूनियन रा दो-च्चार जणा
ऊभा मित्या अस्थानो वानें देखर मुंह फुलायो ती, वा मे सूनं अंक जणो बोल्पो,
"क्यूँ सुगन्ध भेली कोनी गई दीखें !"

"सुगन्ध नहीं बदबोय कैयो । "अस्थानो बोल्पो । बदबोय रो नाब सुणता
हो वा मे सू अंक जणो बोल्पो—तेरो गेलो नाप, नही बदबोय बवार भेली
हुयग्यो ।

"पवायत भेली हुमी । चबराओ मतना, टेम भावे है ।"

"टेम तो भायोडी है पण म्हे अंक र वस्त रेंग हा ।"

"जादा दादागिरी मे सार कोनी । अजार लडता घुरा लागालो । ये
जानो !"

"जावां, मे तेरें वाप री जमी है । अंक बलियो तो आदमी बोल्पो ।"

अस्थानो हाथ फटकारयो तो बीरें बनपटी मार्थ लागी । इतरें मे तो
अस्थान पर तीन-च्चार जणा अंकें साथें झपटया पण कई ओर लोग बीच मे
भायगा । बिगडती बात बचगी ।

प्रस्थानो कैंवें हो—सरकारी टुकड़ा खावणा आळा भी साढ ! आं रो इलाज है—सोट ! स्साळा प्रतिक्रियावादी । गद्दार !! मजदूर रा दुस्-मण !!!....

म्हारें दिमाग रो दरद अब दूणो हुयग्यो । वो चटका मँवतो कैंवें हो—मजदूर मजदूर सू लड रँयो है ।....गरीब सू गरीब लड रँयो है ! माकम कठें ऊभो है ? आदमी कठें ऊभो है ? माकम अर मजदूर ! माकम अर गरीब !! राड—प्रास रो राड ! चिन्तन ! अगूरो है ओ चिन्तन !

यूनियन ओफिस ! सामें कालें माकम रो फोटू । काली दाढो सू ढही ज्योई चेंरें पर चमकती क्रान्तिकारी आख्या । मै आख्या भुला लीनी । सामें वेरी साब बुरसी माथें बँठया हा । वा री आख्या में प्रभुभव री तिरती चिन्ता मनें साब लखावें हो । चेंरो भुरिया सू लुळें हो । लिताड पर मोकळी सळ । प्रस्थानो व्हडो— 'काई मोचो हो, कामरेड ?'

चिन्ता उतारण रा जतन करता वें बोल्या, सोचू हूँ, मजदूर नें पैली मजदूर सू, कर्मचारी नें पैली कर्मचारी सू अर गरीब नें पैली गरीब सू सलटणो पढमी लामी सास लेय र वें चुप हुयग्या ।

मनें लाग्यो, स्यात वें राख सू भरीज्योड़ी सिणवारी नें देख लीनी है ।.... प्रस्थानें अर गँठियें री बात स्थान सुण लीनी है ।....

प्रस्थानो की कोनी बोल्थो । सुण र चुप हुयग्यो । चेंरें पर सोचण रा भाय तिरें लाग्ता ।

यूनियन ओफिस कार्यकर्तावा सू भरीजें हो । सोय आ—भाय र बँटता जावें हा । मै अक कानी घँठयो सगळा रें गना रा भाव पढण री कुचेष्टा करें हो ।

वेरी साब री आवाज सू अचाणवक म्हारो आन टूटयो । वें बोले हा—द्विपर कामरेडस् ! आज आषा कमजोर हा, अगू कें आषा में आषमरी में राड है । आज कर्मचारी कर्मचारी सू मात खावें, मजदूर मजदूर सू मात खावें अर गरीब गरीब सू मात खावें । सरकारी दगन री बात तो अळगो है, आष आष रें सामने इण ओफिस में दो यूनियन है । फरक फगत विचारधारा रा है । काम अक है पण लड । देखल्यो, कर्मचारी कर्मचारी सू परतल लड !..... गरदार नी चावें आषा अक हुवा ! आष कीरर अक हुवा ? मै माकम नें बूझू गानें बूझू ! बनावो ? घेकें री भूठी अपवा में की नी राख्यो है । खानो नारें बाजी सू मजदूर भेळा हुवा हुवें, अँडी बात नी तो कदे देवी अर नी ही कदे ! मुण्णा में घाई । हा लडगा जरूर है । मां नागें, दुनिया रो गिाव आदमी रो

सुभाव दल्ले में सक्षय कोनी ।.....कर्मचारी सरकार र काम मे खी करे
 घर सरकार । 'बोटो घर राज करो' रो नीति र तीखे हवियार सूं घापाने
 सड़ाया राखे । एण घापां समझा कठे ? घा समझ कव घासी, किया, घासी,
 इणरो पडूतर दूँदां तो घाण्यां घामे साव भंधारो घाज्यावे !

हाँल मे चैट्या सगळा कार्यकर्ता गुण हा—वेरो साव रो सारो अनुभव । वेरी
 साव बोल्या—एण वें समझ कोनी ! ओक जणो बोल्हो, 'तो कामरेड घापां नें
 समझ लेणो चाहिले कं.....।'

कामरेड वेरी रा भवारा तण्णया । वें बीच में ही जोर सूं चोत्रण लाग्या—
 तो कर्मचारिया नें प्रतिक्रियावादिया र हाया में सूं प र ओक पामे खड्या
 तमामो देला ? व्यंग्य भर्यो जाग घर रो सबाल यूनियन प्रोक्रिय मे पडूतर
 पातर पसरयो । कामरेड अस्यानो बोले हा—कामरेड संघर्ष करो । गोड़ा नहीं
 देकाला ॥

"संघर्ष पैला खुद सूं करो नहीं नीकरशाही गाह देवली घापा नें ।"
 फेले या हो मसाण जिती सोती । बिडम्बना सगळा र चैरा पर पसरगी ।
 वेरसी आख्या माय सूं भाक ही । कामरेड वेरी भळं बोल्या—ओक रास्तो
 है ।"

"वो काई ?" कई मूडा साथे ही खुल्या ।
 "सुणो !" फेर चुगी । कामरेड वेरी बोल्या, "कर्मचारिया नें प्रतिक्रिया
 वादिया र खिलाफ जिहाद करणो सिखावणो पडला । पैला भाने घाडा नाखो ।
 फेर संघर्ष करो । ओक-ओक कर्मचारी सूं जोड़ो । कर्मचारी री बात बारें हिरदै
 ताई पूगावो ।

कामरेड लिलमी बोल्हो, "एण घोर सगा सबधी भाई—मायला तो साथे
 रचैना ही, कामरेड ।"

"वाने सबधा रो साथी भरथ बनावो । वें प्रोक्रिय मे पैला कर्मचारी है
 घर पछे घोर की ।"

लिलमी छुप हुययो ।

मने दीखे 'वेरी साव र प्रस्ताव मे भर्योडो ताव घर वमजोरी री
 निसाणी । मैं सोचूँ कं आदमी लीम नें कदे छोड देती । मैं बोल्हो, "कामरेड
 घादमी लालच सूं घिर मेल्यो है । ओ लालच पीसा रो ही नी अप्रत्यायत रो भी
 है ! घादमी र मांय लरडियो ल्हवयो चैट्यो है कामरेड ! वो हालताई जगा
 कठे छोडो ? साथे ही लरडिया जलमें भी है कामरेड वाने, इन्सानियत रो पाठ
 पढावणो ओखो है ।'

“घपवादा री बात छोडो कामरेड चीहाण ! अस्पमत न इतरो वम-
जोर वर द्यो के मोको पढ्या आपा उणन नागा वर सका । फेरु लडाई सरु
करो जाव ।”

यूनियन ओफिस मे वंद्य सगळा कायंकर्तावो रे धा बात जचगी ।
चिन्तनशील थैरा चमकण लागग्या । सं उठग्या घर में श्री ।

लडाई आज भी है । आज भी सिएगारी मूळिये री मा रे हावां राख मे
मरीज्योड़ी ऊभी है । घादमी रे डील पर घास उग्याई है । घरां मे वंद्या लोग
परेसान है पण योलें कोनी । मन मिनख री उणियारो मैतो दीख ।

॥ घर बदल लोन्यो—सा'रे ही । के करतो ! गदगो सू जिन्दगाणी ने
सहाय भरण लागगी ही ।



ब्याज अर बट्टो

घार-घार होटल रें सामें पढ्यें बंच माथें बंठ्यो में चाय रें कोप नें उडीकूँ । स्टोव री कोजी आवाज सून सिर दूबें लागो म्हारा । म्हारें मुह डें सू निसर्यो-जह्दी कर भई ।

चीड रें फाटकडा माथें मूँदा मार्योडा गदमैला गिनस । काठ री पेटी रें सामें ऊभो होटल आळो । धीरें आर बार ऊभा आर-पाच जणा । स्वात वं भा चाय री बाट उडीकता हुसी ।

स्टोव री आवाज धीमी पडी । होटल आळो चाय छानें लागो ।

सडक माथें भागें जुलस । आवाज सुणीजें । जीत गया भई जीत गया—राम-चन्दर जीत गया ! रोळो ! म्हारें काना मे दरद हुवें लावा । इतरें मे होटल आळो आयर बोल्या-ह्यो साब । माफी चावूँ थोडी ताळ लगयी ।

में कप भाल लीग्यो । वो चलयो गयो । भेक घूँट लेयी, फेरुँ ध्यान जुलस कानी चलयो गयो । जुलस अब नेडें आयग्यो हो । ठाडी भीड हा । हाथा मे बास री तिसळणी लाट्या । में सोच्यो, जीत मे लाट्या कीकर ? स्वात लडाईं रा आसार दीखता हुसी ।.....म्हारां बिचार बांसा सून टकराय र दूटग्या । इतरें मे जीप मे ऊभो रामचन्दर आयो । फूल माळावा सून लट्योडो रामचन्दर ! मर्न लाग्यो, जाणें व्यवस्था माथें बिजें हासल कर परा आयो है...। इणी बास्ते बीरा भायला खुसी मनाता हुसी ।...

जुलस मेरी आरुषो भागोकर भागें निसरग्यो ।

चाण चूक मेरो ध्यान दूट्यो । होटल आळें रो नीकर राधियो दूट्योडा कोप हाथा मे लिया वेंवें सेठजी, “जुलस मे कोई घक्को दे दीन्यो” वो गोडा भागीन करतो बोह्यो, “देखो, गोडा फूटग्या ...गिलास भी फूटग्या....सेठजी ।

में देख्यो, बीरें टकणा पर लागीं ही । सोही चिलवयाया हा । राधियो पग नें आघर परयां सड्यो हो ।

हाटल आळो स्टोव छोड र बीरें कर्न आयो घर म्हारें देवना-देवता हो

राधिये रा याळ पकड लीग्या भर भापट जडतो बोल्यो, "तने दीखे कोनी हो ? माह्या फूटयोडी ही ? ?....."

राधिया कनपटी हाथा सूं ढक्या ऊभो हो । बीने डर लागे हो, कठे दूसरी पनपट नीं पड जाई । राधिये री चनपट रो म्हारें दरद हुयो । होटलघाळो राधिये रं देवी किया ? मारणं रो बीने बाई अधिकार है ?...नीकरी करणं रो मतलब ओ तो कोनी हुवे के मातक मारे, खाल मरोडे ।....मेरी माह्या सामे दसेक साल रो राधियो रोवे हो । मैं उठ्यो । होटल घाळें रं कने प्रायो । भर बोल्यो, "सेठ, तूं ईं छोरें ने वयूं मार्यो भई ?

"बाबू आपनै ठाह कोनी, वो चाय री भगोनी उठाय उफाए दाबतो बाह्यो, ओ....दो रुपिया रा कोप फोड लायो ।"

"तो के मारणं मूं पोप पाछा आपग्या ?"

"पाछा तो बाबू फूटतापण ही आपग्या हा, भापट तो दूकान सूं घठें ताई लावण रो ब्याज है !"

"काई मतलब ?"

"रोजीना ह्या कोप फूटता रया तो म्हे होटल घाळो तो खा लिया कमाय र । बजार मे ओ रुल है, जे नीकर छोरो कोई कोप फोड लावे तो फूटयोडे कोप री कीमत उणरी तनखा मे सू काटो ।" म्हारें विचार प्रायो राधियो आज बेगार काढसी । बीरें पग रं लाग मेसी है, जे फेर पडग्यो तो विचारें री काल री मजुरी और चली जावेली ।

होटल घाळो आपरें बाम मे लागयो । बात बीरी भरलडता सूं टकरावीज र टूटगी । राधिये रं भाव तो बात आई-गई हुयगी ही । मैं कैयो— "अक चाय और दे ।" होटल घाळो केतली मे सूं चाय रो कोप भर परो देय दीयो मनै । मैं पीवे लागो-गम ।

भार-पार ने लारें छोड र मैं सडक-सडक चालूं । राधिये रो फाटवोडो हाफ पैट म्हारी माह्या माय तिरै । फाटवोडो कमीज माह्या रं चिरे । मैं उतारूं । होटल घाळो म्हारें काना मे गूंजें लागो—बाबू ओ तो दूकान सूं घठें ताई लावण रो ब्याज है ... कोप तो टूटवा ही नुवा आपग्या... ओ रुल है ।.....

मैं भागें भिडतो-भिडतो बच्यो । मेरी माह्या सामे राधिये री मा अक पानी ऊभी चंवें हो—,"श्याम बाबू, ह्या किया चालो हो । सरघा कोनी ?

मैं छुटतो ही बोल्यो— "न ।"

“तो कोई सोच रहा है ?”

“भारे राधिये की बात ।”

“कई बात होगी, बाबू !” उतावलो पण बीरें खेरें पर भायो ।

भा ही के चेतो बाबो भाज सिर पर बोनी जणा भाज छोरें की गत सराय हुवें ।... छोरो होटल पर दुख पायें ।

या सोस लेयर बोली, “श्याम बाबू, मैं लुगाई की बात कई बरु ! ऊन रा बाटा बाढ र जिनदगानी रें चुभोवू—म्हारी जिनदगानी रें । बांटा हो बाटो बिसर मेल्या है असबाहं पसबाहं ! दरद यू बीवर रच्यो जावें, भाा ही बतावो मजबूरी म छोरें नै भेजणो पडें ।” या साम त्रिथो भर फेर बोनी, “होटल—भाळो चुनमी है, बाबू ।

‘कीकर ?’ म्हारें मू डेंसू निसरयो ।

“महीनै मे भायो तनसा देवें । भर भायो सारु कह देवें—बोप फोड दीया ।’

होटल भाळें रो व्याज म्हारी भाग्या सामीं नाचें लागो । राधियो बनपटी पर हाथ दिया म्हारी भाख्या पाय ळभो हो । राधिये की मा कैंव ही “ऊर सूं छोरें नै मारें घोर रामो ! कान ही गाल साल कर दीया ! बायल रा भायो तो रोवें लागो मा कल सूं मैं होटल पर नही जायू ला ...पण मैं जी मोस र बीनै भेजया । कई बरु ? पर तो भायो बोनी चाले । चार टावर, घर में भेषली ! बाफे सान त्रिथो भर बोनी,” ‘बाबू भात्र महीरो हुषां बाठ दिन दिन हुयया पण पीमा बोनी दिमा, तावण नै जाबू । ...

मजबूरी तळें राधिये की भर नै हाव परी बा भायें निसरगी । मजबूर राधिये की मा नै भाख्या म लिया मैं च टू ।

बाग पूर्व भायें सूं लाट्या रो भावाज मुणीजें । मैं देखूं, पुलीस भाळा बीध बचाव करें । रामचन्दर मेरी भाख्या सामीं गीटी ब रेंथो है । हीरसिंह की गोठी मुणीजें हार रो भाज समेत बदनो लेवू ना ।

रामचन्दर नै पुलीस भाळा परुड र लेयया । भीड लीडगी । मैं सडक परा कय मामनै लड्यै नडू कने भायो भर पूछ्यो—‘नडू कई बत हुयगी ?’ “ठाहें रा डोरो डाग फाडें, श्यामगी । हीरसिंह चुनाव म बेल पेर फडवा दीया फेर भी रामचन्दर जीतगी । पण बीरें भापरी हार बरदास्त बोनी हुयी । भागतो पडूच भाळो है, साम लेयर नडू वाल्यो, ‘सरव ई बल भांक दी फिरेस्ट’ नाच रेंथो है । छोटी वटें नै भाख्या घाल्यो को मुद्दावें नी ।

भादगी रो आदिम सम्प मेरी भाख्या मे भायया । नडू कैंव हो—श्यामजी

आदमी रो जीवणो ओखो है । सरीफ लोग बदमासों सँ आखता हुयोडा जीवं ।
लागँ, धरती पर कदे खून-खच्यर हुसी ।

“पण हुसी कद, नदू ?”

की सोचतो वो बोल्हो—“बाबस राखो ।”

‘सवर री भी सोव हूवँ, नदू !’

“पण आदमी नँ आ लागँ जद नी । सँ आदमी इण बात नँ समझँ जद
पार पडै । आपा रँ ओवला रो काई उठै ।”

नदू री बोली मे भी राधियँ री मा रा हीण सुर मुण रँ मैं बोल्हो, “नदू
सगळो मिमल मजबूर है, चँ मजबूरी लिया ही जीवता रँवला ? मरँ लागँ,
मजबूरी उतारणँ री कठँ भी कोसीस कोनी आ कोसीस हुवणी चाये ।

आप ठीक बँवो, श्याम बाबू ! पण बाबस राखो, पकायत हुवँली। . .

नदू चल्हो गयो ।

म्हारी आख्या मे राधियँ रँ हाथ में फूटयोडा कोप । वो रोप रँयो है ।
होदळ आळो जार्ण मार रँयो है बीनँ . राधियँ री मा मजबूर । रामचन्दर .
हीरसिंह . . भर नदू । मजबूरी ।।।

मैं पैट री जेब सँ बीडी काठ रँ सिलगा लेवू भर जबाडा सँ सूट सार-
सार पीवण लाग जावू-धू वो, भर धु वो ।

□□

छगजी रो बेटो

—“बाबा-बाबा, परमा भाई जी नं इनाम मिल्यो है। ओ देखो छापो। वारी फोटू। पूरा ओक लाख रो इनाम मिल्यो है। मुह मीठो कराबोला नी।”

—“जरूर कराबूला पण मन भा तो सुणा कं ओ किए वाबत मिल्यो है।”

—“भाई जी वैज्ञानिक है नी, विज्ञान पर ई मिल्यो है।”

—“भाइया! काई खोज करी है रं।”

—“परम विनासकारी परमाणु सगती रं नुवें विध्वसात्मक प्रयोग साध मिल्यो है, वो छगजी रं चेरकानी देख्यो घर बोल्यो—पण ये उदास कीकर हुपग्या, बाबा।”

—तू जा।

—मिठाई नी देबोला बाबा।

—नहीं दिवाली भावेली न, जणा देवूला।

भोळा भागै की नी बोल्यो। वो जाएँ हो कं जादा बाता बाबा नं भाछी नी लागै। वो छगजी रो बात नं समझ्या, ना समझ्या चलयो गयो।

□ □

भा बा ई नीमडी है जठे छगजी रा बेटो बँठ र पढतो। इण री छाया बी नं भोत भाछी लागती। वो इण री छाया मे तळ बोरी बिछाय र पढतो। इण नीमडी नं उण बखत ओ बठे ठाह हो कं ओ लाटलो भागै जाय र इतरो बडो आदमी बर्णसो। फेर भी भाज नीमडी उदास है—ससारो रं मिनख री तरिया। उणरा पत्ता भी सू मुडग्या है। पिलास छायायो है—छगजी रो उदासी री तरिया। बा सोच, वो भासी मेरी छाया मे भाय र पढसी। सोच सी तद स्हारी काया पलटेली। छगजी भी भा ई सोचै—परमा नं ‘घरा’ कानी बाबडणो चाहिजै। उदास चित छगजी घर नीमडी दोनुवा रो दरद ओक है। छगजी रो वो बेटो है, नीमडी बी पर छाया करी है।

परमानन्द बरोबर घरा पीसा भेजतो। जद कोई कागद आवतो तो बास—

पल्लियें रा लोग बूझ लेवता—परमैं रो 'हरापट' आयो हुसी... बडो सुपातर वेटो हे ...भोळो कैवें हो वें दो हजार सूं वम रो नो भाई जो वदे द्रापट भेजें ई नीं.... छगजी इए पर कैवता—पण म्हानें कठें इतरा पीसा री जरूरत, दो-चार सी भोत । म्हानें आ पीसा री जरूरत नी हे ।

फेर छगजी सूं कोई आगें बहस नी करता । वें वा रो सुभाव जाणता कै अय आगें बोल्या कै वा नें झाल आयो ।

आज परमानन्द रो कागद आयो हो । छगजी सोल्यो । पढ्या अरपाछो लिफाफे मे घाल दिथो । वा रें चेरें पर बडो-बडो विचार रेखावा उघड आयो हो । स्यात वें इए कागद नें वाच र राजी नी हुया । लिख्यो हो—माप छापा मे भी पढ्या हुसी । आपरें आसिरवाद सूं मनं 'देस रो सयमू बडो वैज्ञानिक पुरस्कार मिल्यो हे । विस्वकरमा री किरपा हे आ ..

छगजी री नाड हाली ही—ना-ना आ विस्वकरमा री किरपा नी हे । विस्वकरमा विनास नी आवें । हा . पण . विनास सी प्रकृति रो सुभाव है..... परमो परमाणु सगती पर नुवो खोज कर र 'देस' रो मान बघायो हे ।....नी-नी .. ओ मान भूठो हे . ससारी रें आदमी रो अपमान हे ।....उणरी मौत रो अभियान हे ... ओ अभियान .. रोक देवणो चाहिजें !.... . परमो इया नही करेलो ।

नीमडो रा पत्ता कदे हालता कदे सायत, छगजी रें दीमाग मे उतार-चढाव री तरिया । अय वा फिर हुयगी ही ।



छगजी रो कागद परमानन्द नें मिल्यो तो वो बडी दोगा चित्ती मे पड-ग्यो ।

प्रिय मुना,

यारें पुरस्कार री बात मनैं सब सूं पैला भोळो आय र बताई, जिको तनैं कैया करे—बाका, मनैं इसी नीवरी दिरावो जिए सूं म्हारो पेट भर जावें अर दुनिया री अतमा नी दुखें । स्यात तूं उए री बात रें मरम नें पिछ्छायो हुसी .. तू बीनैं कदे हरायो बीनी, इए वास्तं म्हानें स्यात' सव्द नें काम म त्यावणो पढ्यो हे । तू म्हारी बात रो दोरो मतना मानजे ।

हा, नी जाणें क्यू खबर गुणता ई उदासी आय र मनैं घेर लीग्यो .. हा 'सरव विनासक' झाला रें मुडें सूं निसरधो सव्द मनैं उयल-पुयल कर दीग्यो ।

आदमी नें दमखत री तरिया हुवणो चाहिजें । बडो हुवें, झुरें अर झुकवें । फळ देवें । इसो फळ नी कै आदमी सारु सरव विनासकारी हुवें साची धूमंतो

मा नीमडो भी उदास है। जब रो भेष देख र बा पीछी पडगी है। स्यात बा भी तन की लिखणो चावें। मैं उए री भाषा न की-की मँसूस करे। स्यात बा केवणी चावें—मुन्ना, मैं चारें पर छाया करी भर तू ? तू चारी छाया बठे नी पडबा देवेलो भर नी म्हारी। फेर मा धरती !...ओ तै बी...चारी जात खतम हुय जासी भर म्हारी भी। मन सिकायत है चारें सू। तू वैज्ञानिक है। स की समझण घाळो भर में। थोक रुख। तू जीव री बात पर विचार कर मुन्ना। धरती पर जिन्दगानी री बात कर नहीं घं घाखी चीजा ये वैज्ञानिक बणाई हो, संमूळ खतम हुय जावें, भर ओ ग्यान भी। विनास सीला री सू मन चारें दीमाग सू घावें, मुन्ना। तू न तो म्हानें रँवा देसी भर न ई भपणें—भापनै। तू घाज्या। घठे गाव मे कोई कारोबार खातलें सो भोळो भी बोलबालो हुय जावें। ओ बँवै। मैं सुणू। तनं घागं बढावण मे म्हारो भी की है। म्हारी काया, विछाय र मैं चारें दीमाग नें तरोत'जा राख्यो है। भर अब भी मैं तनं ताजगी सू परं नी देखणो चावू। अब देखलें। अब कानी तू है, दूजो कानी पूरी सिस्टी।

तू इण नीमडो री बात नें समझजे, मुन्ना।

चारी बापू

छगजी।

परमानन्द इण ओळिये नें बापरी जेब मे घाल लियो। जेब मे पड्यो कागद बीरें दीमाग मे कई-कई बर उयल-पुयल मचाई, कई बर धरती छूजो। जमी पसी, धरारा पडी। पण अब उए रें चेरें पर ताजगी है।

□ □

भोळो भाग्यो भाग्यो घायो भर खुसी मे भरयो दनादन बोलणों सऊ कर दि-यो—बाबा-बाबा, भाई जी गाव घाय रँवा है। अब तो भोत मजा घासी। नीमडो सामो सड्यो हुय र बोल्यो—भरें, अब बयू उदास हुय भेली है। हास। देख तैरो मु-नो घाय रँवो है। चारी छिया मे बैठे-गे—चारी गोदी मे। सुणताई नीमडो रा पान खडपडाया भर पीछा पत्ता भड र पड्या जाणें, हासी रें मार्ग 'पंप रा फून' भड र पड्या हुवें। यो बाबा रें सामो नो-नो ताळ उछाना बँवें हो—बाग, परमा भाई जी बी अब लाख रें इनाम नें दुसराय दिया। नही लिमो। ओ देखो अबबार। लिख्यो है—यो पिछनायो करसी—जीव रें साथे इण सपराय सार। ओ देखो ओ अबबार। लिख्यो है—परमानन्द परमानन्द नें पिछ ग्यो। वैज्ञानिका मे हलचल। ओ देखो ओ अबबार। लिख्यो है—वैज्ञानिका री घायो रुपो...

— मन्द्यया भाळा ! ”

—“हां, बाबा !”

—घाव । म्हारै साथे चाल तने घाप र मिठाई खुवावूँला। आज ई दिवाळी है, भोळा ।

छगजो वारै आया तो सहर सून आयोड़ा बडा-बडा लोग वाने घेर लिया ।

भोळो ऊभो खुसी सून भरघोड़ी आस्था सून वाने सून देखे हो ।

□ □

बारणो-बारणो देखती थकी वा सोना रँ धरा मुडागँ भायर ऊभी हुयगी-
मोस बाईजी ! या सागी आवाज जिकी वा बारणँ—बारणँ देती भावँ ही ।
रोजोना भा ई आ आवाज देवणँ सँ उणरी बीनी मे तय भर लय मे कहुणा रळ-
मिलगी ही । सुणण आळो समझ जावतो कै बारँ कोई मागण आळी ऊभी है ।

सोना आज छुट्टी ली ही । बीरा सःसू-सूसरा आवण आळा हा । आवाज
सुण परी वा बारँ आयी, बोली—काई चाहिज ?

भा ई कोई आटो, बोदा-पुराणा गामा ...छोरँ नँ सी लागँ कोई पुराणी
सूटर . काई सा ।

सोना चीरँ चेहरँ माँव निजर्वा गेरी—जोवन रो उजास अजेस ई बीरँ
चेरँ पर बाकी हो । वा कैयो—वे सू बी मजदूरण सू भी गई-गुजरी है । घर-
घर मागणँ सू आछ्यो है बमा भर पगा पर खडी हुव । म्हे भी तो कमावा
हा ।

“वाईसा मागणा तो म्हारो जमारो है !”

“ना, की पळ यम परी वा बोली, यानँ मागणो बुरो नी लागँ”

“ठाह नी बाईसा । छोट यवा ई म्हारा मा-बाप मागण नँ निसर्वा,
उतरा छोटा म्हे”

“सुभाव हुयग्यो है या लोगा रो”

“हा बाईसा”

“खैर, मा-बाप भित्तारी हा तो वे बेटा-बेटी भी भित्तारी ई हुवै ! के
सू थारँ ई चाद रँ टुकडँ सँ बेटे नँ भी भित्तारी बणावेली ?”

“तो कोई बरू ली, बाईसा । इण सू थैव बडो है वो माग परी र भापरी
पेट भरँ । की आटो घरा ले भावँ”

“कित्तोक बडो है ?”

“मो ई कोई च्यार-पाच साल रो”

“तनँ बीनँ मांगतँ नँ देखर बुरो नी लागँ ?”

“नहीं, बाईसा !”

“तू भीने मांगवा न भेजे तो धारं मन रं लागे नी ?

“ना बाईसा ।”

“ये घादमी नी हो ।”

“म्हे भिंगारी हां, कात्तवेलिया हां, बाईसा”

“धारं भातमा है ?”

“हे ई बाईसा ।”

“फेर घा दुलं नी ?

“बाईसा, भागणी तो म्हारो जमारो वा फेरुं आपरो बात गाई घर कंयो, फेर सँ नै ई सुणणी पडै बाईसा । मजुरी करण नै जावँ तो मालक कह देवँ—इयाँ के चाल है, येगा पग उठा, जे इयाँ ई काम करणो है तो कात्त मनना घाजे.. कारीगर दकाल देवँ ...नीकरी करा तो मालिक री भी दस सुणगो पडै ..प्रो बिया कर दीन्यो ..धारो मायो सराब है - तू बेवकूफ है...बाईसा प्रोफिमा मे भी साब फटकार सुणा देवँ, दकाल देवँ ...कागज बगाँ देवँ । मैं तो मठें प्रोक प्रोफित मे देखी आप जिकी प्रोक साब पर प्रोक साब कागजा रो पुलन्दो बगा दीन्यो—जिया मजूरण सँवँ बिया ई म्हे सँ'वा, जिया आप सोम सँवो बिया ई म्हे सँ'वा, सँ पेठ खातर सँ'वँ, बाईसा ।”

सोना बी भिखारण री बात मे आदमी री बियसता देखी घर कंयो—
“धे इण तरिया सोच र अपनै आप नै ताराब मतना करी । मांगणो भोत बुरा है । मजुरी रा दस रुपिया भी भोत चोखा है । तू चावँ तो मैं तनै कोई काम दिरा देवूँ ।”

“काई काम ?”

“बरणण आद साफ करणो”

“बी सूँ तो म्हारो भो ई काम आछ्यो है”

“मागणो काम है ??”

“म्हे मगता-भिखारी तो इणनै काम ई माना, बाईसा”

सोना समझणी कै मगजपब्बो मे सार नी है । इणनै चूत घालो घर भागँ जाबा द्यो । वा माय जाय र चूत ल्याई घर बीरं कटोरें मे घाल दियो । वा लेयर भागँ खलीगी ।

□□

भोत दिन बीतग्या । अंक दिन वा मागण आळी फेर आयी आज वा आवाज नी देयी, बारणो ई खहखडायो हो । सोना बारं देखी । देख परी वा माय रसोई मे गई घर चून री बाटकी लेय परी बारं आपर बोली—“तू तावळ कर मनं भोत वाम है !” जद हाथ भागँ नी पसर्या तो वा बोली—अरे ! आज थारो कटोरो कठें है ? तू मांगवा नै नी आयी !!! मैं तो धारं खातर चूण ल्याई हूँ !”

“नहीं, बाईसा ! इया ई आप सून मिलवा नै आयी हूं ।”

“काई चाहिजे ? पीसा !”

“नहीं ।”

“तो किया ।”

सोना बीं कोनी देखा जावै ही वा बोली—“भवार तो आपरें काम है, पछे घाबू ली ।”

“नदी-नही, तूं आ ।” वा घाडो खोल दियो । वा मांय घायनी । सोना बोली “बंठ ! काई बात है ? छोरो तो ठीक है ।”

“सै ठीक है, बाईसा ।”

“फेर ?”

“इया है बाईसा, बी दिन आप जिकी वाता बत्तायी ही न, मैं म्हारें छोरे रें बाप नै कैंरी । मैं कैंयी—सुगाया काम करे, मैं काम करूं तो बाई ! ये मनं बयू मागवा दयो ...”

“तो काई कैंयो वा !”

“वा इज जिकी बी दिन मैं आपनं कैंयी । पण ,जद मैं टाकरा रो यात कैंयी तो बी बिनेक सोच्यो ।”

“बाई ?”

“कै नाह्वा सा टाकरा नै मांगला नै भेज देवा, वं ठंडी-बानी रोटी साम र पेट भर आवै भर ओक बाटकी चून आपणें वाणी ले आवै, वे इणी साम बी जलम लियो है आपणो वेटो बण्यो है ।....के बाप रो काम थो इज है....मा रो काम ओ इज है....तो धीरें बात जची ।”

“फेर काई हुयो ?”

“भवैं वो मागवा नै नीं जावै ।”

“अर तूं ?”

“मैं भी नीं जावूं ।”

“तो तूं नीं मानें ! ! ! वा वाटकी कानी देगी अर कैंयी—भोन आख्यो काम करयो तूं । काई नाव है थारो ?”

“सोना ।”

“सोना ! हा, ओ ही नाव म्हारो है !”

“सच्च, बीवीजी !”

—“हा तू भोंत आख्यो काम करयो है । सोना, मागणो भोन नुरो है । ओ काम नीं है, सोना । थो तो मागणो है तू तो भोन जोरदार सुगाई है ।”

आ बता तू करे वाई ?”

—‘बीबीजी, तुगाया रे सिलुगार री चीजा छोरें रो बाप लापर दे देवें ।
मैं आस-पास रे गावा म अनाज रे साठे कें इया बेच आवू ।”

—‘आच्छचा ! अरें वाह ! भोत आछनो काम है ओ तो । पण गाव
आछा देख र तनं अचूमा नी करे ?”

—बीबीजी पंलें दिन तो लीम भोत हेप करघो लुगायां भी कैयो—आ
घारें बिधा जची । तू तो चून पाया करे ही न । म धारो नाप लियो ।
कैयो, ‘अक बीबीजी मनं समभायी । वं सील देयी । इण तरिया मैं मागणो
छोड दियो । अब म्हे दोनू जणा बमावा । म्हे जोहडं म ठाय बणा लिया है
बीबीजी अक डालियो उठे सूं ई माटी खोद काची ई टा बणा र लहघो कर
लियो । अक भूपडी बणा र खुड्डी (रसाई) खार कर लीनी । टाबरा नै
स्कूल मे घाल दिया है ।

अरें भोत आछघो सोना । तू भोत चोपो काम करघो है । मैं धारें
दोनू टाबरा नै बजीफो देवू नी । जदताई वं पढेला वारें गार्भा अर पोध्या
रा पीसा मैं देवू ली आज सूं वं दोनू म्हारें गोद है ।

“बीबीजी आप भोत आछी हो !”

‘सोना तू कमाल कर दियो । काई कंवू तनं । तू भोत बडो काम
करघो है ।”

बीबीजी म्हारें लोगां रे मोकळा टावर हुयें । बस म्हारें दो टावर है ।
अब घोर नी हुवैळा कैय र वा मुळकी अर बोली—आ सूं ई म्हे घदलस्था ।”

‘अरें तू तो भोत समझ री बात कैवें सोना । तू अं बोता वठे सूं
सीली ।”

बीबीजी ये ई नो बताई । जे म्हे मागबो छोडघो तो अं सैं बाता मैमूसबो,
ओचबो भी सह कर दियो । मैं धारें कनं भोत पैला आवणो चावें ही पण
मैं सोची कं पैला मैं म्हारो घर बणा सेवू फेर बीबीजी न बुलावू ली जिका म्हानें
मिनल बणर्ण री प्रेरणा देयी । आज तो मैं आपनं लेवा आपी हू । आप अर
साब दोनू आवो म्हारें घरां । आज नागळ (गृह प्रवेश) है । मिनला मे मिलणो
है बीबीजी । आप आवोली न ?”

अरें सोना म्हे पक्कायत आवाला । तू मनं भोत आछी लागै ।

मैं आप तोही कुरस्यां भी ल्याई हू, बीबीजी । म्हारा पाच परवार है
। म्हारी सोभा हावैली न ।

“अरे सोना बाह ! तू आज मर्ने के-के बताती !”

“आप जरूर आज्यो नाळें रं पार जोहडो हे नी, उठें म्हारा ई घर है”

सोना रो धखी रवि घरां आयो तो सोना बी गरीब सोना री बाता बी नं बताई । रवि बोल्थो—तू के बात करे है, अ लोग के बेरो के करे में नी जावूँला फेर तू म्हारी पोत्रोसन भी तो देख । ..

‘मैं जाणू हूँ के आप जिले रा बडा अधिकारी हो पण आपने सोना रं घरां चालणो पडसी या पारी पत्नी रा आत्मिक इच्छा है ...रवि, जे आपा नी गया तो कोई ठाह उणरो बीमाग भटका सा ज्वाबें अर वें लोग फेरु बी ई गेलें, आपर पाछा ऊभा हुआवें ।

आछथो भई, मैं चालू सा, बस ! चाल चाय प्या ।

रवि फेस हुआ । सोना बडो समग रं साथे सजे-धजे ही, जानें वा कोई भोत बडे जलने मे जावती हुवें । रवि नं ओ सा अटपटो सो लागें हो पण यो सोना री बातमा नं नी दुखानो चावें हो । वो बोल्थो—लै बयत हुआयो !

“अबारे ई आयी, बस !”

सोना भोत खुस हो । ज्यूई बीरी गाडी नाळें रं साकडो आयी तो वा बोली-इणी रं परले कानी गरीब सोना आपरो मजदूर महल बणायो है, रवि मैं भात राजी हूँ ।

रवि बस ‘हूँ’ कैयो । यो गाडी ड्राईव करतो चाल रैयो हो । नाळें नं पार कर परी गाडी ज्यूई आगें आयी तो दूर बाई ओड़ी लुगई-मोदुपार ऊभा हा । नगर विकास प्राधिवरण करमचारी विध्वंस मचारैया हा

सोना रो देखर काळजो बैठयो रवि बोल्थो-प्राधिवरण आळा ओ काई कर रैया है, सोना !

“आप गाडी चाहती चलावो ।”

सरपट भागती गाडी रा बरेक सोना रं घरा रं सामी आपर लाग्या । सोना गाडी रो गेट खोलर भट बारें आयी सामी खड करमचारिया नं देख र बोली—आप कुण हो !

‘नगर विकास प्राधिवरण रा बर्मचारी !’

‘आदेस सेयर आया हो ?’

“हा, पण आप कुण हो ?”

“मैं कैवूँ, आदेस दिखावो !”

“नीं दिखावा”

सोना आदम्या अर लुगाया नं इसारो कर्यो—यां सें नं पकडत्यो जावण

मतना द्यो—म्हे भवार ई पुलोस लेयर भाया ।

सोना विलखं हो—“बोबीजी अब म्हे के करस्या !” तूँ घरबार मतना भां लोगा नै हरजानो भरखो पडैला । बिना किणी भादेस रै भँ गरीब लोगां री छियां ढाह नाखँ-भानँ मै सबक सिपावूँली”

सोना री भादया मे जखरी गरीब सहेली री उजड़योडो गरीब महल तिरै हो । वा प्राधिकरण री गाडी रै बनै आयी अर कँयो—सोना, देख के है ! इएरै अ्यारु पंडा री हवा काढ दे । देखस्या ! भँ भागमी किया ? वा सोना अगहँ पईया रिता दिया प्राधिकरण रा भोकर देखता रा देखता रँयभ्या । उठीनँ नोजु-वान वारै बायेडा करणा सरु कर दिव्या ।

रवि कार भूँ वारै तिसर्यो वा लोगा रै कनँ भायर बोल्थो—भो काई कर रँया हो भाप ! सँ परं हुज्यावो ! छोड द्यो भानँ ! अेक करमचारी रै बनै भायर वो बोल्थो—काई नाव है ?

“जी !”

“काई पोस्ट है भापरी ?”

“जीस !”

“सँ भूँपड़ा गिरा दिया ! भावो म्हारै साथै चालो धारो सामान भी लिमावो !”

वै अ्यार भादमी हा रवि वानँ कार मे बिठा लिया अर सोना नै कँयो—
“भाप अठै ई रँयो मै भानँ छोड भावूँ भाखिर तो भँ सरकारी करमचारी है !

“भजी साथ भापतो देवता हो ।” वै अेक साथै बोल्था

‘भादेस लेयर भायो हो ?’

“नही साथ !”

दूजो बोल्थो—मै नट्यो हो, साथ डरा-चमका द्यो तोडा-कोडी मतना करो मिलै सो सेल्यो पण भँ मान्या ई कोनी !”

“चालो कोई बात नी ।”

जूमई रवि री कार थाणँ माय बडी तो वै भोचरका रँयभ्या बोल्था—भो काई करो हो साथ ! !

“गरीबां रा घर ढाह नाखो जिका नागल री ख्यारी कर रया हुवँ घर थारै साथै भो भी नी हुवँ ! ! ! गाडी रोकर वै कोटवाल नै कँयो—भानँ ‘भरेस्ट’ करल्यो, माई सेल्फ रवि प्रकास एम. डी. एम. (इस्ट) भँ लोग गरीब लोगा नै बरबाद कर दिव्या है बिना कोई वजं वां रा घर ढाह नाख्या है गाडी मे भारो सामान है वो भी बर्ज करल्यो”

“यो वाक्यो कठं हुयो, हुम !”

“आवो धारं सारं चालो !”

कोटवास सिपायां नं वानं बन्द कर देणं रो हुम देयर रवि री गाडी मांय वंठयो जद बं उठं पुग्ग्या तो रोवा-भूरो मांय भेल्यो हो नगर विकास प्राधि-करण री पिचकपोडी गाडी दह्योडा ठावा रं सामी ऊमी हो । गरीब सोना रा न न्हा-नान्हा टावर वानं अपलक जोर्य हा । स री आस्यां घेब दूर्ज री आस्यां मे अयूभ विध्यस री बात देसं हो । सोना री आस्यां नीली हुयणी ।

□□□

भरार बारंरा बज्या हा ।

वो फावडा-परात घेव कानी मेल दिया । बारं, खिडकी रं गमछं म लिप-टपोही रोटपा पही हो । वाने हाथ म लेयर वो बारं घायग्यो । कन ई भेक कुवाटर हो जिए माय भादमी रंयं हा । लॉन मे भेक भादमी कुरसी पर माय रं हाथ लगाया सोच रो मुद्रा मे बंठपा हो । कनं पापर वो बाल्यो—बाबूजी, पाणी लेल्लू दीपारी करणी है ।

बाबूजी बीरं चेरं कानी देख्यो । निरमळ मुख पसीनं सू भरपोडो हो । मु डं पर तेज हो । उण रो साहस भर हीमंत ऊपर छलकं हा । घेरं पर छाई उदात कार्यं क्षमता साव दिखं हो । उण रा गढपोडा भुज सुपुस्ट वडा स्थल पळ मे ई आछी आकृति बणा दीनी । बारो निगावा बाळू माटी सू भरयोडा पगा ताई घायगी । वं बाल्या—भाव, अठे छ या मे बैठ । मैं माय सू गिलास लेयर भावू, वं उठता थका बोल्या—भाराम सू नास्तो कर ।

बारं नळ हो । वो हाथ धोया । दोनू हाथा मे पाणी भर सजळ धोवं सू मु ह घायो, भर लॉन मे घाय र भेक कानी बंठग्यो । बाबूजी बीरं गिलास भला दियो ।

वो भापरो नास्तो खोल्हो । बाजरं री दो मोटी-मोटी रोटपा भर कोई तीन-च्यार हरी निरच ही । रोटी रं सार्ग हरी निरच तोड र वो निरभाव सू खार्ब हो । जद निरच खत्म हुवगी तो वो गमछो भेलो कर परो बाल्या—मडो सू पतकाळी लेयर भावू, कंयर वो उठग्यो । बाबूजी बोल्या तू बैठ । मैं लाय र देवू । वं माय गया भर की हरी निरच भर गुड लाय र बी युवक नं दे दिग्यो । वो बोल्हो—भाप तो पतकाळी रं सार्ग ओर भी भीन कुछ त्या दियो साव । परन्तु कठं भी बीरं चेरं भर भावा मे कमजोरी नी हो । हा सावता-सावता वो भा जरूर कैयो हो—गाव सू घाया कई दिन हुयग्या । आज काम मिल्यो है । ठकं-दार सू दस रुपिया टोली रा बोध्या है । दो टोली तो नाख दीनी । घायण ताई दो ओर गेर देवू ला । भाप सू मिलणो हुवतो रंसी । कई दिना रो काम है ।

सुस्तावे लागो । बाबूजी बूझ्यो—बीडी सिगरेट ?

‘ना साब । आ ई आपन भोत तकलीफ दे दीनी ।

“नही घा क्या री तकलीफ । बैठ थोडो भाराम करले पछे काम लागजे ।
युवक बोल्थो—काम काई है साब । माटी गेरणो कोई काम है । मैं तो
भोत बडो इच्छा लेयर सहर आयो हो के कोई चोखो काम करू ला भर पूरे तन
मन सू करू ला । पण च्यार-पाच दिन हुयग्या, आज आ काम मिल्यो—माटी
गेरणो रो ।

‘पण तू तो इएने भो पूरे तन-मन सू कर रंयो है, मैं देख रयो हू ।

‘तन सू कर रंयो हू, साब । मन न तो लगा मेल्यो है ।

“किसोक काम करणो चावे ।”

‘जिबो मैंनत रो हुवं । पड्यो चिरयो तो मैं हू नीं बिया फैवट्री मे मैंनत रो
काम कर लेवू । कोई रे घरा भी काम कर लेवू ओर भी कोई होबो पण तिथ
वधो काम हुवं । लाघा नी हुवं । मजदूर न लाघा भार देवं । ठालो बैठघो
आदमी बेतार हुज्यावे । इणी वास्तं मैं गाब सू आयो हू ।”

युवक री आरुषा मे उदात आसावा भरयोही हो । भर डोल पर बीरे
नोजुवान हिम्मत धिरकं हो । कीं ताल बाबूजी सू याता वर परो वो पाछो
आपरे काम लागयो । फावई सू परात भर-भर वो बिना किली भार भावना
रे माटी गेर रंयो हो । बीरे पगा में फुरती हो ।

कोई दस बा'रा दिना रे अठगई वो अठे काम करयो । अकेदिन बीरो
ठेकादार भी उठे आयो—छोगाराम कितरी टोली नाख दिनी ।

ट्रक्टर घाले सू बूझ लिज्यो, ठेकादार जी । वो जितरी गेरी उतरी मैं
आ सकाना माय बिछा दीनी । मन हीसाव नी आवे । हा, रोजीना च्यार टोली
मैं माय गेर परो ई गयो ।”

जणा तो आछी-लासी मजूरी कर लीनी ।

‘पण मजो नीं आयो, साब । आप कोई बडो काम लेवो केर देखो
काम ।”

‘बडो काम लियो है, छोगाराम । थारे ऊपर छोडू ला वो । तू से रो ध्यान
राखजे भर काम भी करजे ।”

“पण मन हीसाव नी आवे, साब ।”

“वो मैं करलेवू ला कीं दाम—त्राम चाहिजे ?”

“मैं भी वंवण आळो हो आटे—दाळ रो हीसाव साच्यां न भी देवणो है ।

गांव में बीरी बूढ़ी माँ और बापू हा । जितरा दिन वो गांव में रँयो, खेतों में काम कर र घापरँ बूढ़ा माँ-बापू री टहल-बन्दगी करी पण जद गांव में काम नी तो वो कै करँ ? वो किया उठँ रँवतो । खेत तो नाव री हो—दो बीघा । फेर किया गुजारो चालतो । उतारणँ री सरथल नी हुवँ तो मार्यँ भी कीकर करीजँ । खेत में तो गाय-बकरी जितरो चारो भी नी हुयो हार र वो सहर घायो हो । पण गांव में ई वो सोच लीनी हो कै भब सहर जायर कोई तिय बघ्यो काम पकड़णो है सो सारो सरतर जम्भो रँवँ, वो इणो भास में घटे घायो हो ।

ठेकादार री नु वो काव सल हुयग्यो । छोगाराम नँ काम मिनग्यो, वो जरूत रा पीसा ई ठेकादार सू लेती बाकी ठेकादार कनँ ई राखतो । बीच में वो अक दो घर गांव गयो तो ठेकादार भाग्या जित्ता पीसा बीनँ दे दिग्या हा । गांव ज तो सो वो ठेकादार सू पीसा ले लेतो घर घरा नाज-वाणी री थल कर आवतो घर सरखी दे आवतो ।

ठेकादार बीनँ ठेकँ पर ई काम दे राख्यो हो । इण वास्तँ वो गांव सू घापरँ कई भायला नँ भी ले घायो हो । पँला वो नीव खुदाई ठेकँ पर लेयी । फेर कीँ दिना तिय बधी काम कर्यो फेर छात-गिराई ठेकँ पर लेयी फेर घोळप री काम मिलग्यो, छोगा रँ मजूरी पडँ लागी ।

अक दिन रात रा वो देख्यो—बीरी ठेकादार मकान बणाया वा में सूँ अक मकान में कई मजूरा रँ साबँ बँठ्यो हो । कई बीरी भावभगत में लाग भेल्या हा । लुगाया रोट्या बणावँ ही । छोगाराम कनँ प्रायग्यो । बोल्हो—घाप भाज घरा नी गया, साब ?”

“घरा ! ओ घर ई तो है ! .. घापणो घर ! घापा बणायो है—पँला घापा इणरो मजो लेस्या फेर मालिक ! ये बणायो है मैं बणायो है इणनँ । वो बहकँ लागो—दाह पीसी ?”

‘नहीं साब ।’

पीसँ भीत मजो भावँला !

“नहीं साब !”

“अच्छा....तो बैठो...यह साबो....।

“नहीं साब !”

“कँ नहीं साब-नहीं साब लगा मेली है—बैठ ओ बोद्धा अक गिनास त्या !”

“नहीं साब ! आधो मैं धान घरा छोड़यावूँ । आपरी तबियत ठीक नहीं है !

“काई कैयो, घरां ! आज तो अठे महफिल है—महफिल ! तू देखजे थोड़ी देर में ओ मकान पांच तारा होटल बणए आळो है तू चिनेक पील ! लें” ! वो बोलत कान हाथ घालें लागे । छोया वीरो हाथ पकड़ लियो—नहीं साब वो आग बोलतो इतरें मे भेरियो मेवा री छोरी न ठहरवतो माय बड़यो ।

छोगो देखर र दंग रंगयो भेरिया री आख्या छोया न देखर मुरभायगी ठेकादार कैं हो—लेऽऽ आधो !

“हां, साब !” वो नीची निजर्या पड़ सर दियो ।

लें ! वो ओके सोब री नोट बी कानी कर्यो ।

छोगो ओ सो साग देखकर देखतो री देखतो रंगयो । वो ठेकादार न उठा लियो भर कैयो—चालो ये भोन पीवी हो । धान अठे नी रेंवणो चाहिजें ! म्हारें साथ चालो आ छोरी...ओ सैं कौं ..आखयो नी है । छोयो ना—ना करना भी बीने वारें लिखायो । ठेकादार न की होत पक्कायत हुबंला । वो लडलडानी बीरें सागं हयायो, बारें आवर वो बोल्यो—छोगा, मैं चलयो जा स्पू । मन होत है । तू म्हारी गाडी उठाल्या । छोयो बीने गाडी लायर दे दी । वो गाडी पर सुधार हयायो छोयो आपरें धान प्राययो । पण ठेकादार आपरें धान-मकान नी मरो । वो हजार पाव सो त्ररव कर्यो हा । वो कीकर घरा आवतो वो मोटर साइकिल न अठी—उठी घुमायर पाछो बिकें प्राययो—भेरियो बीने भर-भर गिलाम दारु प्यावें हो, बीच-बीच मे वो कैंवो—लें तू भी पी भर सैं न प्या ! सोडमाल थारो ई हो .. ठेकादार बहकें हो....! पण छोया री आख्या मे नीद नी हो ।

□□

छोगा रा भर बीरें साध्या रा ठेकादार मे खामा वीसा चढया । कई दफा छोयो बीसू माया पण बिच पास हुबण री बात कैयो । छोया न विस्वास हो के ठेकादार बीरा पीपा नी राखें नो पण जइ वो ‘साईट’ पर आचणो बंद कर दियो तो छोया रें पगा तळ री जमी मरहवी । बीरें गाव रा बीरा लापोडा बीरा साथी ठेकादार न कैं आणें ? छोयो मुपीवत मे पड़यो ।

, छोयो ठेकादार री भोत ब ट उडीनी पण वो नी प्रायो । छोयो दूटयो ।

ओक दिन प्रायण रा वो बाबूजी कर्न प्रायो । पूरो बात बनाई । बाबूजी री मुणर भापणा सण गी । रोटो पर पड़योडी हरी मिरचा वारी आला मे घूमें लागी । वें बोल्यो—छोगा, तेरी मैनत पच नी सकेंली बेमीन मरेंवो ओ रु दिन ।

पण प्रवार तो में मरगयो, बाबूजी गांव से बदनामी हुसी । आयो हो कमा-
बानें भर मोठो करज कर लियो ...बी रो भास्या मे पाणी आयगयो ।

बाबूजी रो भास्या सामी वै उत्साहो भास्या जिणा माय वै उभर्योढी
भाकाशावा देखी ही बानें भर वै रोवत्या नै देखें हा । वारो हाथ हवळा-हवळा
छोपा रै काध कानी जावें हो ।



माटी री सोरम

रूपा काका रं घरं सूं बारं घायर में गोवं पढ़ायो । घागं पण भल्लगो
रामनियो भापरं ऊटा नै लियो जावं हो । पून में भल्लगोजे री भावाज तिरं ही ।
ऊटा रं पगा सूं गयोडें गोवं री माटी पोनी होययो ही । म्हारा पग रूप्या जावं
हा, भर गरद गोडा ताई भायमी ही, फेर भी में चाव्यो जावं हो उणरं सारं-
सारं । रामनियो भल्लगोजा बजावतो चालें हो । तान में लटका बरती बी री
नाड भव दिल्वा लागमी ही मन । में भाय ऊ डरं हो पण वो भावरी धुन में
मस्त चालें हो । म्हारं भर रामनियं रं बीच में कोई पचासेर पावडा रो देखो
हो ।

रामनिया रा ऊट घागं जोहडं का १ जावण भाली गेनी में मुड्या । मन
सिवाय ऊटा री मुड्या रं की नी दीखें हो । ऊट जोहडं कानी जावं हा । में
निजर भागीने पसारी, तो देखो—सरडियां-छाळिया बोलवालो मुडा मारतो
जावं ही । में गेलो बदल लीन्यो । चूनभल्ली बिरामणी रं खेत री सीव रं
सारं-सारं लुकतो छिपतो में चालें हो । म्हारं काना में रूपा काका रा सन्द
रं-रं सुणीजें हा । बंजिया, जे तू चिनेक भी चूक्यो तो नेरं की हाथ नी लागे
तो ॥ में बाख्या भपकाई । चाण चूकें म्हारी निज्या सामें जोहडं भाय
जावती भेड-बकरिया भायें जाय लागी । सीतनी वानें टोरती थकी जोहडं कानी
ले जावं ही ।

जोहडं री पाळ सूं की भल्लगो भेव सूपो जाट ऊमो हो । रामनियो भल-
गोजा बजावतो उठीन ही जावं हो । सीतनी सरडिया भर छाळिया नें छोड र
उण कानी चाल पडी । में देखो, वं भायर बी जाट तळें बंठया ।

में कुलबं-कुलबं सरवतो सरवतो भायर सीर री घाट में बंठयो । बाबी
सीव मांकर मन वारी बाबी देही साव दीखें ही । में देखो, सीतली उण सूं
भल्लगोजा खोसणें री करं ही । रामनियो कस्तूर करं हो बाबी । पण ही सीतली
बी री सायळ पर गोडो मेन र बी रं हाथ सूं भल्लगोजा खोसवा लागी, वो हाथ
परं नें लेययो । रामनियं रो सिर जमी पर टिकयो । सीतली री देही रामनियो
री छाती पर ऊपी होययो । वा डील रं मठ सरवती भागोजा भायें हाथ

मारवो चावै ही पण वो हाथ ऊपर-नीचे करे हो । जद सीतली री छोती राम-
नियं रो छाती पर टिकी, तो वो हाथ सीधा कर दोन्या । सीतली ग्रनगोजा खोस
ली-या घर उठ बंठी होयगी ।

ग्रनगोजा अब सीतली रै होठा सू बतलावण करे हा । जोहडो घर
जोहडें रा जीव मुगें हा, सीतली री बात जिशी ग्रनगोजा माहर निसर र मीठी
होवनी बारें भावें ही ।

मनं अबम्भो होवें हो रं सीतली इनरा आछा ग्रनगोजा बजाणा जालुं । मैं
सीव री मोट मे बंठयो मुगें हो घर सीव मोहर देखें हो । रामनियो स यद भाग
सू बंठयो मुगें हो । सीतली भूमं ही ।

जद बा गा परी परें हुयी तो रामनियो ग्रनगोजा बानी चाल्यो । मैं
लकारो करघो । म्हारी आवाज बा रें काना ताई पूगयो ही स्वान । वें हासल-
बाकल होया देखें हा-अंक दूजें कानो । मनं लाग्यो, सीतली रामनियं नै की कंवै
पण मनं नी सुणीज्यो । मैं ऊभो होय्यो । सीव-मीव पाछो चानतो
घको भागें कूचें री मोट में रहहतो निमर परो गोरे भावें आयायो ।
पण मन किया ई करे हो । मैं खुद सू हो बतलावें लागो मैं सीतली
घर रामनियं रं बीच मे बयूं आधू ? मनं ने पढी । जे देख्यो है तो साथ
देवणो चाहीजें । आवाणचक मनं हगें काकें रा ध्यान आयो । मैं भुभुलावें
लागो .. रुगा काका री बाता मे तू बयूं आवें ? ... ओ तो अ परी ऊमर अंक
घर रा दो घर करघा है....छोरी-छोरो दोनू स्याणा है ब्याव तो दोनु बा रो
होणो ई है ...जे तेरें सू बी यणें तो तू बा रो गदद कर आडें मतना
भाव । मैं खुद नै देख्यो तो हासी आयगी । बेमतलब बिचार र चिन्ता करा
धीनी । वें बंठ्या काई सोचता होसी । स्यात उठ र दूदता फिरता होमी-मनं !
मैं सोचतो घको चालें हो । रुगा काक, नै बयं देवू ना, सीतली अर रामनियं
रो ब्याव कर देवणो चाहीजें । ज रामनियं रो बापू भी मानें तो मना लेवणो
चाहीजें ।सीतली अर रामनियं रो प्रेम साबो है । मैं चिमबरो-कठें बारो
प्रेम ई तो म्हारें चोषहदी नी फेर मेल्यो है । भागें बहघाळी ध्यावू मायगी ।
मैं दमघडो ठेंग्यो ठडी द्याव मे । पण मन नी दम्यो । वो म्हारें साथी सीतली री
बकालत करे हो-प्रेम करणो ओई अन्याय थोडो ई हो ! तू जे मिनन है तो
बारो पक्ष लें । छोरो स्याणी है । छोरो कमाऊ है ।फेर तनं घाई भावगं मू
मिल के जासी ? के तू वानें छटपटाता नै देख र राजी होवणें चावें ?
दण सोवणें प्रेम री हत्या मतना करा .. रुगा काका री रतनूजी सू सीचा
लागो है, दण खातर वो बात उदावें अर तनं भी माघ घीमं । भाव तू कह द-
बावा, तू भूझी बाता उड वें । सीतली अर रामनियं रो मेळ तू देव लियो है ।

अब वाने अलोपदा करणो पाप है । .. म्हारी आस्था मीच र खुली । चाँए चूकें म्हारी आस्था सामे बढ रें दूध रो टोपो आयर पड़्यो । मैं देख्यो—कबूतर-कबू-तरी ओक कंवली डाळी मार्ये बँठ्या वार्ता करै ह्य । मन सीतली घर रामनिये री याद आयगी ।

मैं ऊभो होयग्यो । ह्या काका रें घरां पूग्यो तो काको आपरी पोळी में बँठ्यो हुक्के सू बतलावै ह्य—कुटड-कुटड । घर घुबो निसरै हो मुँडें सू । मन देखता ही बो बोल्हो—मुराग मिल्यो ? उणरो हाथ घोळी भूँछ्या सू उतरनो थको डाढो रें नाकें ताई आयो ।

“काका !” छिए माय सीतली घर रामनियो सूखें जाट तळें पसर्योडो म्हारी आस्था में आया । पळ में ही म्हारें मुँडें सू निसर्यो “की नी मिल्यो, काका । लोग ह्या ई भूठी वाता करै ।”

“बंजिया, आ तो हो ई नी सकें ।” कँयर काको फूँक सारी घर छोड दीनी ।

‘म्हारी आस्था साव भरें, काका । जे आपरी अनुभवो आस्था आ री साव नें ओळख सकें तो आप देखल्यो ।

रुगो काको म्हारी आस्था मांय देखें लागो । मन डर लागै हो, बँठे बीतें सीतली घर रामनियो आ माय सूखें जाट तळें पसर्योडो नी दिख जावै । आस्था भपहाय र मैं पूरी खोज दीनी । रुगो काको पळे के म्हारी आस्था कानी देख्यो घर बोल्हो, “मन तो काळा मणिया दीवै. बंजिया !”

“अ तो पारै है भी है, काका ।”

“तू ठीक कँव । तेरी घर मेरी दोनुंवा री आस्था में ई है—काळा मणिया ।” कँयर काको लाबो सास भरी घर आपरा हँठ हुक्के री नळी रें लगा लीन्या । मन लाग्यो, “काको म्हारी बात जाण्यो है । मैं कँरी, “काका, रतनूजी रें घर री इज्जत फर-फर उडण लाग री है । रामनिये घर सीतली रो गाव घर देखणो चाहीजें घर ।

“तू की देख्यो लागै ।”

“ना, मैं मोचूँ हूँ काका ।”

“मे भा सोचूँ हूँ. तूँ जा ।

मैं लटग्यो । घर जावण री बजाय में गाथा गावें पड़्यो । जद मैं जोहड़ में पूग्यो तो मन ऊट लरहिषा घर छल्लिया रें मित्राय नी नी दिरयो ? मैं घायर भी सूखें जाट तळें बँठग्यो । म्हारी आस्था मीननी घर रामनिये नें

जोवं ही । मैं नी दिह्या तो मैं सरकर बीं जगां आयग्यो, जठे मैं बंठ्या हा । बीं जगा री माटी री मैं लप भरि घर नाक सामी लेयग्यो । मैं सूंघीं तो मनैं बीं मांय सीतली घर रामनियं रें प्रेम रो सोरम आयी ।

अचाणचक मनैं गुसर-फुसर सुणीजण लागी । मैं बान लड्या कर सीग्या । आवाज अठे ही बठे आमैं-पामैं सूंआवैं ही—देख रामनिया, रुगा बाबा री मेरें बापू मू बदावत है । वो बाता उडावैं मेरी । वो बापू मू बदलो लेवणो चावैं । तू कठे बदल मतना जाये । मेरी काया री सोरम लेयी है तो हणरो मिलागार भा बणजे ।

“मैं बापू नैं बह दी-यो —मीननी, आवणैं घर री बह बणैंती, बापू ।”

“तो तेरो बापू चाई कैंयो ?”

“मुस्वन ।”

“तू मे पहनूर दियो ?”

“मैं पूछ्यो—क्यू बापू ? तो बापू कैंयो —रतनूजी मू आवणो सगपण नी हाय सक् । क्यू कैं रुगैं बाकैं री छोरी री मगाई जद अरुनातर आछैं घर म होवैं ही ता बं भिबकी देयी ही । मुक्नछी रें सासरें आछा नैं बीं रतनूजी री ई री ही । मुक्नछी री मीन नैं बाको कदेई नीं भ्रम सक् । भाया नैं बेराजी कर पाया ता ब्याय बोरी परा । छारिया रा पाटी बोनी । पोही ताछ बोलबोना । फेर मीननी री आवाज मुलीजी तू चाई कैंयो ?

“रुगा बाबा आवणी जानैं भायां बीं री रात में क्यू पहा ।

‘इण पर तेरा बापू चाई कैंयो ?’

‘भायां वो नाम है ।’

“तू चाई कैंयो फेर ?”

‘तो फेर धे पारें भाया म रेंगे । मैं तो ब्राह्मं म ऊट परायू, उठे ही रेंयू, जे धे नीं मानग्यो ता पर उठे हा रेंबो करयू । क्यू परां पायू । इमं म मो पाणी । मा प्यारी बान नैं ममाळी पकी बोनी, रुगजी पावरी जानैं, पायानें चाई मतभव । छारी राम पाटी है, भाया तो ब्याय र साधवा । ई पर बापू बा-रा —भाया म रेंगन है र गती ? मा बोनी—तो कें होगामी । बानें र भाई बानी बाय । जे बातें मर जानी पा पाया नैं ही मर जानी । ई पर बापू फेर बो-रा —फेर मा-बगे देख्यो घर ममअ में आवें त्रिया करया, तेरा-मेरा बसाव हाईरा भोती ।

‘मैं राग बोनीये बान्यो राजनिया । पाता-पाता नामा पेंर, गोवला-गावला मंथा । र मबबर र पतुनी नरें परी ...।”

मैं खांस्यो ! आवाज बन्द होयगी । मेरी निजर उए जगं टिक मेली ही जठं सूं आवाज आवं ही । भनै लाग्यो, उठै कोई उठो खाडो है । घर खाडो सणियां घर खीपा सूं छायोडो है । खीपा मार्य माटी है स्यात इणी माय सीतली घर रामनियै रो प्रेमालाप चाल रंयो है । पण सामे रामनियै नै माय सूं बारं निसरता नै देख र 'स्यात' सांच रै नेही आयगी । भनै देखतां ही वो सरमायो, पण लारं सरक्या पण किणी तरिया चाल र वो म्हारै नेहं आयायो घर बोल्यो—

“बैजू भाया, किती क ताळ होयगी आया नै ?”

“भोत देर सूं बैठघो हूं ।”

“है !” बीरं चरं पर हैफ पसरयो । दूटघोडा सा समद बीरं मुहं सूं निसरया—“जएरा तो ये . ।”

“हां, पण सूं किण सूं बतळावै हो ?”

‘अ’ अ’ अ’ ...।”

“बता !”

“सीतली सूं ।”

‘बठै है बा ?’

“खाडै मे !”

“खाडै मे !! बुला बीन !”

वो हेलो करघो—सीतली बैजू भायो है, आया ! मैं देखै हो—सीतली सरमाती यकी खाडै सूं बारं निसरै ही । भेळी हुयीसी वा घाय र धेक कानी बैठगी । मैं बात सुरू करी—‘सीतली सुण्यो है, तू अलमोजा भोत सातरा बजाणा जाणै ?’

“ये कड सुण्या, भाया ?”

“मु वारं बजावै ही न ।”

“तो ये ही खास्या हा, भाया ?”

“हा ।”

“वा सरम सूं भेळी होयगी । मैं कंयो अलमोजा सुणावैली ?”

“ना ।”

“क्यू ?”

“ये म्हाने देस्या क्यू ?”

बीरी नाइ अजं ताईं भी कोनी उठी ही । म्हारी निजरयां बीरं मेसा में तिरं ही । मैं सोचं लाग्यो—बाई जबाब देयूं ? थोडी ताळ पछे मैं बोल्यो—‘इयां ई गेलं बगतो देख्यो हो । घोर कोई बात कोनी ।’

थोडी ताळ चुप्पी । कोई नौ बोल्यो । फेर रामनियो सीतली कानी देख तो

बोल्यो, 'भलगोजा ल्यावू ? सीतली'रो निजरथा ऊपर नै उठी । रामनियो देख र धारी भासा समझी अर फेर खाडै कानी चल्यो गयो । पाछो धाय र सीतली र हाथा मे भलगोजा देवतो वो बोल्यो, "बैजू भाया, म्हारा तो भो खाडो ही घर है । जे आप लोग झाडै घास्यो तो, म्हे तो फेर अठै ही रोटी बणास्या !"

मने लाग्यो जिया वो म्हारें चनपट मेन देयो होव । मैं कँयो, "तू गळत सीच । मैं थारें झाडै नी काम आवूँला । जे कोई भी 'जान नी' घडयो तो मैं बढूँला ।"

"आप गुणी आदमी ही, भाया ।"

सीतली नीची नाड करघा बँडी हो । छोट रं घावरियं री लाल मंगजी नै दोनू हाथा री घामळया सू पकड्या वा की सोचं ही । घाण चूकं छोडणी सिरै सू सरकी लो वा हाथ लेराने कर-कर पाछो सिर ढक्यो । रामनियो नैडं वँठयो कँवै हो—बैजू भाया सू काई सरमावणो सीतली, छं तो आपणा बडा भायो है—बाप री जगा, सुणा !

सीतली रो ध्यान टूटयो । वा भलगोजा हाथा ले लीया । मैं देखे हो - सीतली रं होठा रं लाग्योडा भलगोजा मुर काडै हा ।

जोहडो पसरयो गुणै हो—सीतली रो भलगोजा सू निसरती मन री बात । मैं गीत मे गमायो ...रामनिया ई तो हँ ई रो भवर ...कुरंजा । ..सने सो घर मैं ! .. हँ !!!

सीतली गीत पूरो करे हो । रामनियो वँठयो हो । भलगोजा होठा सू परे कर र वा बोली—भाया, मने तो इसा ई आवे ।"

'कमाल है, सीतली ! इसा तो मैं पेली बर सुण्या है । छोरी रं मुँडें सू भलगोजा री आवाज कोई जो बिरली ही सुणी हुवँला ।"

रामनियं रा घा बळा सीतली नै सीसावण सारु मगर चप्यपावतो मैं उठयो तो वं भी साथ उठया । रामनियो आपरें ऊटा नै धावें करघा अर सीतली आपरी भेड-बकरिया नै । मैं पिछम कानी देख्यो—मूरजी रा रग खुपी सू हिंगळू बरणो होय्यो हो । मैं आन चल्यो गयो । वं लारें आवे हा ।

रात नै मैं रतनूजी सू मिल्यो । रुपा काका सू बात करी पण बात बिरकै कोनी आयी । मैं सुवें रुगै काकें सू फेरु बात करी, "काका आप धूँ घाट देवो हो ?"

"मुझनही री ल्हास तू देखी ही न, बस इण वास्त ई ! वारी अरे लामो सास लेयी । मैं हामी भरी—"हा काका ।"

'तो समझन ! जे रतनूजी नै माटी मे नीं मिनायो तो मेरो नाव रुपो

नहीं ! वो सास लेकर बोल्यो—“बदली लेवूँ ला, बेजिया, तिया बिना नी रंगूँ ।”

“एण बाका सुणवा में घायी है कं वै दोनूँ जणा ई ब्याव रवाय रया है ।”

“मा बिया हो सब ।” वो सोचें लागो ।

“मा तो ठाह बानी, वारा !”

“मैं देख लेवूँ ला । जे रामनियो बी मू ब्याव बरयो तो सीतलो रा वा ई दुरगली होयलो जिकी मुक्कनही रो रतनूजी बरवायी ही ।”

“मुक्कनही री गढासिमा मू बुरी तरिया काटपोही मिरत देही म्हारो ब्याव मे तिरया लागयो । मैं बमबयो भर कंयो, “पुराणी बात न गयी देयो, बाबा । या तो कोई होणहार हो तो होयनी ।”

“होणहार कोनी ही बेजिया, ई रतनूजी रं बच्चे रो बरवायोडो काम हो ।”

“धे बड़ा हो, बाबा ।”

“ना माफी नहीं दे सकूँ, बेजिया ।”

मैं उठयो । रुना बाका रं घरा मू निसर र रामनिय रं घरा बानी चल्यो गयो । घोर बापू मू मिल्यो । बात-चीत करी । रुनी बाको धूटी दे राखी ही । घीन, वो टग मू मत नीं होयो । पक्षपोछरी मे, मैं बूझ्यो, “जे रामनियो घारं भोलें सीतनी मू ब्याव कर लेवें ?”

“वो म्हारं मू गयो ।”

“घर धे बीं सुं ! मा हो बात है न ?”

बां बेठी रामनिय री मां बानी मुहतो बयो मैं बूझ्यो, “कयूं बाकी थारी बाई राय है ?”

“वा ही जिकी रामनिय रं बापू री है ।”

रामनिया री मा भी बढायी । मैं उठयो । रतनूजी बने गयो, नीं धे बापरा रोजणा मुणारं माया —छोरी है बदनाम बरण में नाम मेम्मा रं —बिया बगब होती ?”

“मोग बदनाम नीं करे, रोजी बान बंवे है ।”

“धे कंयो ! !” चेहर पर हैण हो बारं ।

“हो ! रामनिय रं मायें ई सीतनी रो ब्याव होयला ।”

“ये रवारी करा ।”

“बिया ! मैं ममदरो कोनी !”

मैं रतनूजी नें आखी बात समझाई । वै मानग्या । मैं बारें आयग्यो ।

□ । ।

ज्यूंही रतनूजी कन्यादान करघो कें गोव कानी सूं रोळा सुणीजण लाग्या । देवजी पडत रो ध्यान भी उचटग्यो । वै फटाफट काम सलटावण मे लाग्या ।

जोहडी री रोनक मे विघन पडतो साव दिखें हो । रामनियं रं बापू रं साथे दो-तीन लुगाया बुरी तरिया रोळा करती आवें हो । वारें लारें हगो वायो आवें हो । मैं उठ र खेजडं कने आयग्यो ।

पण पडत जो आप बानी सू काम रुल्टा दिग्यो हो । परें सूं रोळा करतो रामनियं रो बापू म्हारें कने आय र बोल्थो — म्हारें वेटें रो ब्याव करावण म छो तूं कुण है ? ओ ब्याव भवें ई हुस्ट है ।

“हुस्ट तो रामनियं रं करया होतो बाबा । मैं कोनी करघो ब्याव, राम-नियो करघो है ।”

“अ सैं तेरा काम है ।”

“जे म्हारो काम है तो मैं थारें सू जी नियो कोनी, देव रेंवो हू — सोजणी बहू ।”

“म्हानें कोनी चाये ।”

इतरें मे रुगो काको आयग्यो । अथ तेरा कें मेरा ! बडकती आवाज मे वो कैंयो, “कुण तनै चौधरी घरप्यो . कुण कैंयो कें तू ओ ब्याव रचाय .. लाठी फटकारता थका वो बोल्थो—कमीण रो सिर भागबा द ! ...

मैं लाठी पकड लीनी घर बोल्थो, “काका, सिर तो भलाई भाग दीज्यो पण ओ घर मतना भाग दीज्यो ! म्हारो हाथ खाडें कानी गयो ।”

“आ बदमासी बरदारत नी हुवैली ।”

“माफी देवो, बाबा ।”

“माफी ! !” वै लाठी छुडावण री कोसीस करे लाग्या । पछोछडी मे मैं कैंयो, ‘काका ओ बूढो जाट ऊभा हैं नी’ कितो सायत है ! इण सूं सील ल्यो !”

पण वै मान्या कोनी । मैं देखू कें सीतली घर रामनियो भाराम सू जोहडें मे रेंवें । बदे कदास मे मितवा नें जावू तो रामनियो कैंया करे— गांव री गघ सूं म्हे तो भठें ही ठीक हा भाया । घर वो आ कैंय र म्हानें भकभोर देवें । मैं सोचबा लाग जावू घर देखबा लाग ज्यावू अवे नु वो जीवन-दसरण—रामनियं री बात माय भरघोडो ।

□ □

राई-राई रेत

दोफारी ! नीम री डाळी माये सुळबुठाट । चिडी री आपरें साधी सूं
मुलाकात ।

बात ! बात मे दोफारी जितरी री जितरी गरमी । इण गिरमी माय
नीम री छाया तळें अंक कानी अंक कीडी आपरी घर बणावें । मुंडो भर-
भर रेत लायर बारें नाखें । रेत रो दिग । मादमी री इण कानी पीठ है । सामें
बैठी ज्योत्सना कैवें, “इण तरिया मतना कर अजय नही.... ..!”

मुह फेर्या बैठयो अजय ज्योत्सना री बात तो समझयो पण वो आपरी
ई गावतो बोल्यो, “म्हारें कने ओर उपाय कोनी ।”

“उपाय है अजय पण तूं करे कोनी ! तूं के बेरो काई सोचें । गेलें री
बात दर नी करे । जे तूं दिया करसी तो बता, म्हारो काई हुसी ?”

“हुसी काई ! म्हारें बिना भी तो की हुबतो, वो ई हुय जासी ।”

“थो कोनी हुवें अजय वो कोनी हुवें ।”

“तूं गळत सोचें ।”

“ना, चिनेक ठंर परी था बोली, ‘तू चिनेक थारी गळती नै भी देख, अर
फेर सोच अजय कं में गळत सोचूं हूं के ?’”

अजय री जीभ तालवै चिपयी । पण सरम नाखतो वो बोल्यो, “वा थारी
अर म्हारो दोनुवा री भूल हो, म्हारें अंकलें री गळती कोनी ज्योत्सना ।”

“बात बात मे गळतो भूत बणागी अजय !!” ज्योत्सना रें चेरें पर
अच्छमो हो । अजय आपरी गळती नै भाळ री चादर सूं सुकावतो बोल्यो, “तूं
फगत म्हारें कामो ई देखें, यारें गेलें कानी कोनी देखें । जे गेलें कानी देखें तो
आ बात ही कोनी हुवें ।”

“ज्योत्सना बोली, “पण आ बात आज क्यूं नर हुय रंयी है, इतना दिन
बयू कोनी हुयी ?”

“इतरा दिन में थारें प्रेम मे गेलो हुयो घुम हो ।”

‘तू दगो करे, घोखो देवे अजय ।’

‘ओ घोखो कोनी, ज्योत्सना, जिन्दगानी री जहरत है । भावुकता म येवणो बुद्धिमानी कोनी ।’

‘तू म्हारी भावुकता रा गुटबया लेयर बदल रेयो है अजय ।’

‘नही में जिन्दगानी रे सार्च घरथ वारी जोय रेया ह ।

‘पण वे ओ म्हारें सार्ये घोखो कानी ? अजय रे चंरे पर धावरो आख्या टिकायर वा बोनी ‘अजय, थारी बात रे सार्ये चिनक म्हारी बात नें भी विचार । थारें सार्च प्रेम री सोगन म म्हारी गंलाई नें भी धार’ । तू अब मनै विसराय मनना म्हारी आनह्या रे दरद नें समझ ।’

अजय रे ज्योत्सना री कवछे बाता कठे नी नागो । वा बोल्थो — तू भरम नें बडो कर रेयो है ज्योत्सना । इण उमर माथे चाखत पगो रे पू परा हवै, अर वे घाजं हो ।

‘मैं तो थारें भी हा ।

‘मैं कद नटयो ।

‘अब नट रया है नी ।

‘मैं नी नटयो ज्योत्सना म्ह री जिन्दगानी नट रेयो है ।’

‘तू कोनी नटें ?

‘म्हारी जिन्दगानी ई नटें ।’

‘क्यू बापडा जिन्दगानी रो नाव बदनाम करे अजय । तू हा कर दिया था वोले भी के ?’

‘आ नी बोने जणा ई तो मनै योवगो पडें ज्योत्सना ।’

‘तू आटा कहे ।’ की मोचनी बकी ब बोली ‘ओ क बात कंवू अजय, ‘किणी री जिन्दगानी नें मोसणो आछथो वाम कोनी है, लखी माम लेयर वा भळें बोली ‘साथे तू किणी खबर मे है ।’

अजय बोनवानो रेयो ।

ज्योत्सना बोली ‘ज तने इग तरिया ई अरणे आपने गिरावणो हो तो प्रीत नें मैली नी करण री हो अजय । तू प्रीत सार की नी जालें । मनै अ थारें म राफ र तू खुनी डूबें तो देख तो जं ओक दिन आ थारी खुयो हो तने घटवा सू खावण लाग जावेंतो ।

अजय मुळबथो अर बोल्थो ‘मैं म्हारो आगो-वारो मोन बाछी तरिया सू समझू, ज्योत्सना ।’

‘क्यू वे तू सुगरथो है, निसरमो है ।

ज्योत्सना री वान रो अजय पर की अमर नी हुयो । ज्योत्सना बंटी कंवे

ही, "खोदे, वो ई पहे अन्नप । देख लीजे, खाहो तू ही खोद रेंयो है ।"

चाणूचूके नीम रे दरखत माथं चिढ़्या री चूँ-चू री आवाज सुणीजी । अन्नप री निजर नीम कानी गई । अचाणूचक वो चिमनयो, अर बीरं मूँडें सूँ निसर्यो—वाऽऽ ढीऽऽऽ !

ज्योत्सना लामो सास लेयर बोली, 'हा अन्नप बाडो ई है ।'

अचाणूचक चिढ़्या उडर चलीगी । यूनिवर्सिटी लॉन में निरवाळा ऊभा मेंदी अर नीम देख रेंया हा—वा का ।



ज्योत्सना ओक मध्यमवर्गीय परिवार री लडकी ही । उण रा बापू बिहारी लाल लखनऊ में लेक्चरार हा । अन्नप रा बापू बुनकर हा । ज्योत्सना फिलोसॉफी डिपार्टमेंट में पढ़ें ही, अन्नप साइकोलॉजी में एच डी करे हो । ज्योत्सना इण सरस फार्मल ईयर में ही ।

ज्योत्सना फ़र्लैंड-इयर में पढली जद सूँ ही अन्नप बीरं नेहँ आगम्यो हो । बा बीरं बर-बर में कंशणें सूँ ई आपरो मनो बणायो हो पण अन्न तो बा छुद इज बदलम्यो । बा प्रीत नै प्रीत सूँ परवारं देखें आपो । जितो अन्नप जात-पात नै भैर बतावतो वो ई सामी अन्नप मात्र आपरो उणिमारो आपरें समाज में देखें लागो । स्मात् वो कठैऊ ई बढकायो हो ।

ज्योत्सना बीन आपरें उणिमारें री बात भी बनाई पण वो ओक नी मानी । ज्योत्सना री बात री बी पर रती भर असर नी हुयो । वो बीन प्रधर में छोड दीनी । जद अन्नप आपरें ई समाज में अक व्योपारी अमीलाल री बेटी रोता सूँ व्याय रचायो तो बा घायल सरपणी री दाईं फुफ्फारी पण बीरो बस नी चाल्यो । आपरें बापू रें इजवत रें किवाडा में कंश हुपर बा बीनवाली रेंग्यो । बीन लाग्यो जाएँ, बा अ धारें सूँ काठी ढकीगयो है । आपरें स्टेडी क्लब में बंठी बा मन मसोस र रेंग्यो । तरें-तरें रा विचार दीमाग माघ निरबो कर्या ।

आज बा बेटी भविष्य नै मोसं ।



पी एच. डी कर्मा पछें अन्नप यूनिवर्सिटी में ई लेक्चरार लाग्यो । ज्योत्सना इण साध पी एच डी सारू आपरो रजिस्ट्रेशन करवायो । यूनिवर्सिटी में कदे-कदास आता-जाता वें मिल जावता तो मामूनी 'हेलो' हुप जावती । ज्योत्सना आपरो निजरूयाँ मूँ बी कानी देखनी तो अन्नप नै लागतो कें ज्योत्सना

अर्थ भी बी बानी देखें ।

भटवयोई अजय रें मन मे भरम ।

या दुर्धी ।

रीता रें ऊची-ऊची जगा जावणें भर बीरें सुछंद सुभावं सून अजय रो
रुग-रुग दरद करे । बीनें वारें घठें रीता रो जावणो दर पसद कोनी पण फेर
भी वो रीता नें की नी केवें । जद रीता बीनें दत्रियाऊस बतावं तो नी जाएं वो
क्यू चुप हुय जावं । ”

रीता रा सबध बघता ई जावं हा । लारलें दिनां सुणुग मे आई कें भर
तो बीरी मिनिस्टरा ताई मे भी वूम हुवं लागो ।

रीता भापरा ई काम बाढती, अंडी बात नी ही, अजय सारू भी या जता
करती । अजय रो इतरो वेगो रीडर वणु जावणो डिनाटमेंट मे खास अचम्भें
झाळी बात कोनी ही । रीता अजय नें प्रोफेसर वणावण सारू भावरें तन-मन सून
जतन करे ही ।

अजय जद-बद भापरो उणियारा रीता मे देखतो तो नीं जाएं वो क्यू नी
बोलतो ।

रीता रा अं व इ जीनियर फ्रैंड बीनें फस्ट-क्लास बगलो बणाय र दियो
हो । अजय रीता रें साथे इणी म.य रेंवें । सुणो है, लारलें की दिना सून अजय
नें वो बगलो खावण नें भावं लागो । रीता रो हरकता बघती । अवं ज्योत्सना
बीरी छाती चढे लागो ।

धेव दिन अजय यूनिवर्सिटी लॉन म ज्योत्सना नें ‘हैना’ कर परो रोकी ।
कनं आया पछें बी सून की नी बोल्यो गयो । जद ज्योत्सना रो वाली सुणीमी
तो वो बोल्यो, ‘ज्योत्सना, जे कीई आदमी मेवो भूल जावं तो बी नें सिजा
मिले ?’

ज्योत्सना मुळी भर बोली, ‘मिले ।’

‘काई ?’

‘मीत ।’

ज्योत्सना कंयर गम्भीर हुयणी । अजय रें मूडे सून निमर्यो इतरी ..
वरडी सिजा । ”

“हा ।”

‘उमरवेंद ।’

“मनं आ इज चाहिजे ।”

“चाहिजे सो ई मिल मेली है, अजय । किणी नें देवणें रो दरकार ई
कोनी ।”

अजय भ्रमरी घूट गिटी भर बोल्थो, "बड़ी जी अमूर्त ज्योत्सना, मने प्रव.....!"

'पण मने अरु रोसनी छाछी नी लागे ।'

'मै उकतायो ज्यो, ज्योत्सना ।'

'तू थारी भो' अजय ।'

"पण अरु ।"

"रीता तू पिंड छुडावणो वाई सोरो काम कोनी, बड़ी ऊ ची-रु ची जगा पहु चे बा ।"

अजय रै अ तस रै गैरी ओट लागी । उण रो हाथ उण रै गाल कानी गयो । भरभरायो ज्योड गळै तू वो बोल्थो "इया मतना बोल, ज्योत्सना ।"

'क्यू ।'

'मै धायल हू ।'

"पण मै डाक्टर कोनी, अजय ।" ज्योत्सना कैय र भागे निसरगी । अजय भी कानी देखतो हो रैथयो ।

दरद लिया भायर वो आपरै केबिन मे बैठयो । चाणूकै फोन री घटी वाजी । वो बिना मन तू ओगो उठायो भर बोल्थो, "हेलो ।"

उठी नै तू रीता री आवाज भाई—मै किछी जरूरी काम तू मसूरी जाय रैयो हू । आप चालो तो अवार ई भाज्यावो ।

"म्हारो मन कोनी ।"

'तो मै काल भावू ली ।'

'पण तू आज मतना जा, म्हारा दोस्त घरा भासी ।'

"अर म्हारा दोस्त र ?"

'बासत लागे थारै दोस्ता रै ।'

"अर थारा रै र ?"

"मै क्यू, कठै नी जावणो हू ।" कैय र वो ओगो पटव दी-यो भर देखल रै भायो लगाय र बैठयो ।

अमूर्त विचार अजय रै भावै भाय तिरै । चाणूकै रीता भाई । अजय नै इण तरिया बैठथे नै देख र वा बणावटी अचम्भो करती बोली, "अजय, वाई हुयो थारै । सरदा तो हू ?"

अजय रीता नै लाल आंखुवा तू देख्यो भर बोल्थो, "म्हारै की नी हुया । तू भठै करोती भाई हू ?"

“घारी परमीसन सेवण नं । मेन्टेरी साब रो मंसूरी प्रोग्राम है वं पण
भाव सूं सार्पं चालण सारू कैयो है । चालो, भाइयो रंसी ।”

“मैं कोनी जावूं ।”

“तो मैं चली जावूं ?”

“नहीं ! ! !”

“भाज घारे बाई हुयग्यो, भजय !”

“की नी हुयो ।”

“मैं ‘यस’ कह दीनी बीरो बाई हुसी ?”

‘तो जा पण ... ।’

“बाई ?”

“उठे ई रंजे, छोटी छठं मतना भाजे ।”

“तूं दक्खिमानूस है । हर बात नं गळत ‘भंगल’ सूं सोचणो सरू कर देवें ।
मैं कंवू सार्पं चालो, उठो ।”

भजय उठग्यो । रीता रं सार्पं घरा भामो, गाभा बदर्या घर छटेची माय
जरूरी सामान जबाय र बीरं सार्पं हुयग्यो ।

गेलं मे बीनं ज्योत्सना मिली ही ।

□ □

‘हैलो !’

‘बधाई हो ।’

“भापनं भी ।”

ज्योत्सना घर भजय भाप-भापरी बधाई माय देखें । भेक बणी, भेक दूटें ।
ज्योत्सना कैवें, ‘बेटो हुयो है, मिठाई भी नहीं !’

“वो म्हारो बेटो कोनी, ज्योत्सना । रीता रो बेटो है — रीता ... रो ...
बेटो ।

“रीता रो बेटो ! ! !”

“हा ज्योत्सना । तूं कोई दूजी बात कर ।”

“भंडी काई बात है ?”

“मैं उण सूं भलायदो हुयग्यो हू ।”

“पण वा घारे सूं बंद भलायदो हुवण भगळी है । भजय, घारे जेडो भादमी
बीनं दूजी नी भिलणं रो ।”

“भलाई मतना मिचो ।”

ज्योत्सना सामी सांस सेपर छोड़ती पकी बोली, "लुगाई पातळ हूयं अजय, सोग साथे भर बगा देवं ।"

"ना ज्योत्सना, लुगाई-लुगाई हज हूवं ।"

"तो फेर आदमी गळी रो बुत्तो हुवतो हुसी....।"

"पारी बात सही है, ज्योत्सना । आदमी नें आप रें उणिपारें नें समझणो पडसी ।"

"गामभणो तो अजय लुगाई नें पडसी नहीं बा दोगला आदम्या रें हापा हिरान हुवती रेंवेली घर हुवती रेंवेली अजय, बठें अन्त नी घायेलो ।"

"पण रीता भी तो लुगाई है, ज्योत्सना.... .. बी सारु भी तो..... ।"

ज्योत्सना रें घेरें माथें भेंप चढयो । अजय बात बदलतो बोल्यो, "शु आपरें लेखरार बणनें री मनं खुसो है ।"

"घर मनं आपरें भेटो हुवणं री ।"

ज्योत्सना भेंप अजय नें पकडाय र आगें निसरयो । अजय उण हानी देखें हो ।

□ □

अब वो अकेलो हुपयो । मसूरी आळी पटणा सूं वो भीत दुखी हो । छेवट वो रीता नें बह दीन्या "रीता, आदमी सांसर कोनी हुवं ।"

"पण आदमी भी हुवं नी ! मैं तो आज ताईं आदमी कोनी देख्यो । अजय, 'मेरीज' री मतलब विमेनत्लिव पर 'इमरजेन्सी' नी हुवं । आप ई बतावो, आदमी वगूँ सारें भाजें ?"

"मैं नी भाजूं ।"

"आप नी भाजो ! के ज्योत्सना वूँ आपरा ताल्लुकात नी हा ? के आप व्हारें साथें ब्याव नी करयो !! आजादी भोगणियें आदमी नें लुगाई नें भी आजादी भोगण देणी पडसी । किती बेजा बात है कं आदमी आप करें तो आछयो घर लुगाई करें तो माहा !!! समाज मे वं दोनू रेंवें, अजय ! मिनस री आ के मुखदाई है ?.... मैं अईं आदमी पर सी बर थूकू, अजय ! ब्याव री मतलब लुगाई सारु जेळ नी हुवं ।आदमी घर लुगाई दोनू समाज रा अग है । अक खुल्लो परो घर दूजो भूखा मरें, आ नी हुम सकं !!! जिक्को आदमी आ सोचें वो फगत आपरें सुख री ई सर-तर करें जिनतें अब लुगाई बरदास्त नी करेली । . अजय . फगत आदमी ई लुगाई नें 'अपमानित' करें घर सुख भोगें । लुगाई रें मुख माथें बुस राखणियो आदमी

कायर है, जुलमी है डरपोक है ...मूरत है । .

अजय रोता सू अपमानित हुयो ।

□ □

अब वो आपन 'इजी फीन' करे हो । स्मात अठे उण रे काळज मे ज्योत्सना सारू कठे ई जगा बरौ ही । ओक दिन वो ज्योत्सना सू मिफो घर बैयो, "ज्योत्सना, जिन्दगानी रो उणियारो घादमी खुद है । समाज भोत बैकग्या है । पिछम कादो इतरा लागग्यो है के अये तो सकल ई पिछाएनी मे को भावैनी । मयारें माय अपणेस लखावै ।'

'मा धारो बैम है, अजय ।'

'बैम दूर करणो चाहिजे नी, ज्योत्सना ! मर्न माफी दे दे ।'

"दह बिना नी ।"

'वता, काई दह देसी ?'

"अग्निप्रवेश ।'

'मैं जल जासू नी ।'

"इयां तपीज बोनी ।"

ज्योत्सना कैयर भागै निसरमी । धुनिवसिटी लॉन मे आज भी अलापदा ऊभा मैदी घर नीम वा कानी देखे । दोनुवा रे बीच दूरी है ।

कीटो बने ई आपरो घर बणावै । राई-राई रेत भुहं स सायर बाँ नाले । रेत रो डिग । घादमी रो पीठ है—इण कानी ।

□ □

बी. एल. मालो अशांन

गाव सक्षमण गढ (सी हर)

शिक्षा : एम ए (प्रथम शास्त्र) एलएल.बी.

प्रकाशित पोथ्या :

किली-किली कट हो	(कहानी संग्रह)
राई-राई रेत	(")
मिनस रा खोज	(उपन्यास)
माटी सून मजराह	(निबन्ध)
बोसता साखर	(नाटक)
बैजू	(बाल उपन्यास)
पिटू बाबू	(बाल उपन्यास)
बिलानियो दादो	"
कुचमादो राजू	"
दूधिया दात	"
तारा छाई रात	(निबन्ध)
दलसत	(कविता संग्रह)

अनुवाद :

एलिस इन वडरलैंड

डेविड कॉपरफील्ड